प्रेरक प्रसंग

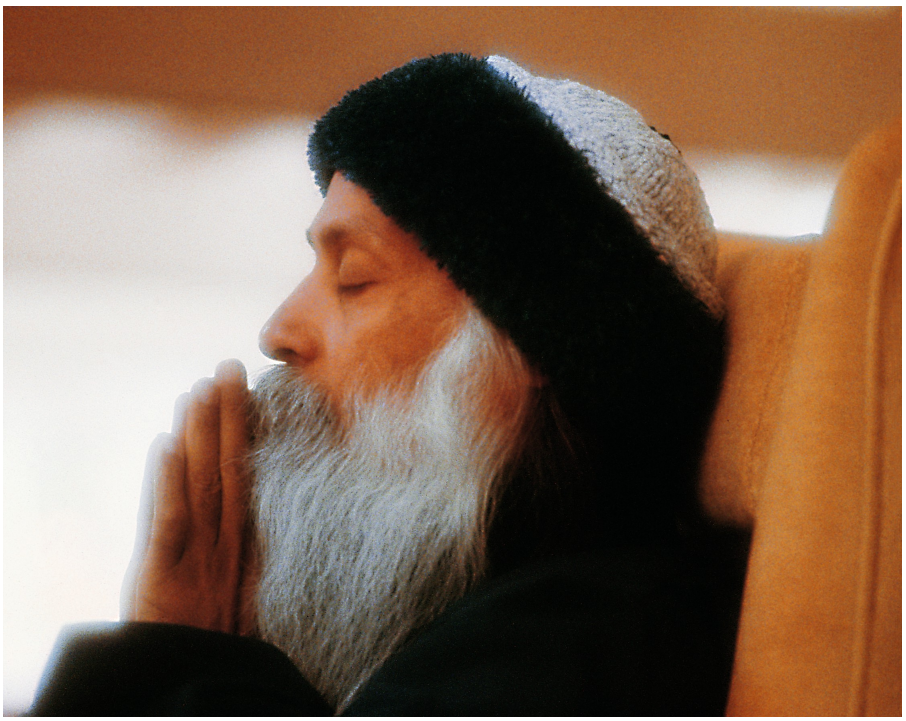

ओशो प्रवचनों से संकलित

ओशो फ्रैगरैंस

श्री रजनीश ध्यान मंदिर
कुमाशपुर–दीपालपुर रोड
जिलाः सोनीपत, हरियाणा 131021

contact@oshofragrance.org

www.oshofragrance.org

Rajneeshfragrance

+91-7988229565,+91-7988969660
+91-7015800931

संपादन एवं संकलनः मा ध्वनि

मुख्य बिन्दु

झुके तो कीमत
संतोष के आयाम
बेईमान मन
पात्रता का शोरगुल
कण-कण पुकारा
उसकी प्रार्थना
गलत में सब राजी
अहेतुक स्मरण
लंबी भ्रांति
मेरा बेटा
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि
प्रेम का माधुर्य
मारनहार तारनहार
सारे धर्मों का सार
वह तीसरा
बेशर्त प्रेम
आपे को काटना
सौ चलते हैं एक पहुंचता है
खुला आकाश
आध्यात्मिक दासता
चौथा उत्तर
खजाने सत्य के
सत्य का आवास
सत्य की लर्निंग
ज्ञान का पहला चरण
जानने की तैयारी
सुबह के टुकड़े
सत्य की उपलब्धि
मेरे साथ कोई नहीं
जो बोले वही नासमझ
शब्दों से भरी खोपड़ी
थोड़ी देर का ख्वाब

भूमिका

वर्तमान युग में जीवन के रहस्य-'ताओ' या 'धम्म' को समझाने के लिए परमगुरु ओशो ने बहुतेरी कथाओं के माध्यम से अपनी गहन बात बड़ी आसानी से लोक-मानस तक पहुंचा दी है। जीवन के बारे में जो समझ कथा-कहानियों से मिलती है, वह उपदेशों या दार्शनिक विवेचनाओं से नहीं मिल पाती। छोटी-छोटी कहानियां अपने अमूल्य संदेश को कब दिलो-दिमाग में उतार देती हैं, इसका पता ही नहीं चलता। भावार्थ हृदयंगम करने वाले सुधि पाठक को ये जिंदगी के विषय में नए सिरे से सोचने-समझने के लिए तो विवश करेंगी ही; इन्हें पढ़-समझ के वे खुद को रूपांतरित करने में भी अवश्य सफल होंगे।

प्रस्तुत है परमगुरु ओशो द्वारा 'संभोग से समाधि की ओर' प्रवचनमाला में सुनाई गई लघु-कथाओं, का संग्रह। सभी उम्र वालों के लिए उपयोगी!

-मा ध्वनि

झुके तो कीमत

मैंने सुना है, ऐसा हुआ कि एक सम्राट किसी भी फकीर के चरणों में झुक जाता था। उसके वजीरों को अच्छा नहीं लगता था। और उसके वजीरों ने कहा, यह भला नहीं है; यह ठीक नहीं है। यह शोभा नहीं देता। आप इतने बड़े सम्राट हैं। ऐरे-गैरे, कोई भी फकीर चले आते हैं, भीख मांगनेवाले फकीर, आप उनके चरण छूते हैं? आप सिर झुकाते हैं उनके चरणों में? यह सिर बड़े सम्राट नहीं झुकवा सकते, यह सिर कभी नहीं झुका—विजेता सम्राट था—इस सिर पर बहुमूल्य हीरे-जवाहरातों के मुकुट होते हैं। इसको आप झुकाते हैं फकीरों के चरणों में? गंदे फकीर, नंगे फकीर! उस सम्राट ने कहा, समय आने पर जवाब दूंगा।

एक दिन एक आदमी को फांसी लगी। बड़ा सुंदर आदमी था, बड़ा प्यारा आदमी था। कुछ भूल-चूक की थी, सम्राट से कुछ धोखाधड़ी की थी, फांसी लग गयी। लेकिन चेहरा उसका बड़ा सुंदर था, रूपवान था। उसकी गर्दन कटवायी सम्राट ने और अपने वजीरों को कहा कि इसको जाकर बाजार में बेच आओ। सम्राट ने कहा था तो वजीरों को जाना पड़ा। जहां गए वहीं लोगों ने कहा, हटो-हटो, भागो यहां से! यह क्या ले आए हो तुम? इसका हम क्या करेंगे? और बदबू भी आ रही है, तुम यहां से जाओ! तुम होश में हो? कौन खरीदेगा इसको?

जहां गए वहीं से भगाए गए। सांझ होते ही वे वापिस लौटे। उन्होंने कहा, यह तो बड़ा मुश्किल मामला है, दो पैसे में भी कोई लेने को तैयार नहीं है। पैसे की बात ही अलग, लोग खड़े नहीं होने देते। वे कहते हैं, अपना रास्ता पकड़ो! बात ही नहीं करते, खरीदने का तो सवाल ही नहीं, लोग हंसते हैं। वे कहते हैं, पागल हो गए हो? आदमी के सिर का हम करेंगे क्या?

सम्राट ने कहा, तुम सोचते हो, कल जब मैं मर जाऊंगा, तुम मेरे सिर को बेच पाओगे? दो पैसे में कोई खरीदेगा नहीं। भूसे के सिवाय इसमें कुछ है भी नहीं। भूसा भी बिक जाएगा।

एक और ऐसी कहानी है। एक सूफी फकीर को कुछ डाकुओं ने

पकड़ लिया। मस्त फकीर था! अलमस्त फकीर था! और उन्होंने सोचा कि बेच देंगे इसे गुलामों के बाजार में, अच्छे दाम लग जाएंगे हाथ। उसे लेकर चले। राह वह में एक सम्राट की सवारी गुजरती थी, सम्राट रुका, उसने कहा कि यह आदमी कहां ले जा रहे हो? उन्होंने कहा, हम बेचने जा रहे हैं, आपको खरीदना है? गुलाम है, खरीद लें।

उसने कहा, दस हजार रुपए में खरीद लेता हूं। लेकिन उस फकीर ने उन डाकुओं को कहा कि इतने सस्ते में बेच मत देना। ठहरो जरा, तुम्हें मेरे मूल्य का पता नहीं।

आदमी बुद्धिमान मालूम होता था। थोड़ी देर साथ उसके रहे भी थे, उसकी मस्ती भी देखी थी। हो सकता है ठीक हो। तो उन्होंने कहा, नहीं, इतने में नहीं बेचेंगे। तो सम्राट ने कहा, बीस हजार देता हूं। उस फकीर ने कहा, तुम जरा धीरज रखो। अब तो उसकी बात पर भरोसा भी आ गया। दस से बीस हो गए। उन्होंने मना कर दिया बेचने से।

आगे फिर एक धनी की सवारी मिली। उस धनी ने कहा, पचास हजार रुपए देता हूं इस आदमी के। उस फकीर ने कहा, तुम बेच मत देना जल्दी में—वे तो बिल्कुल आतुर हो रहे थे। पचास हजार! जब ठीक कोई मूल्य बताएगा तो मैं तुम्हें खुद कह दूंगा कि बेच दो।

फिर कोई और मिल गया खरीदनेवाला जो लाख रुपए देने को तैयार था, लेकिन फकीर ने कहा, जरा सावधान! अब तो वे जरा गुलाम बेचनेवाले भी चिंतित हो गए कि इससे ज्यादा दाम मिल नहीं सकते। हमने बड़े-बड़े गुलाम बिकते देखे हैं, मगर एक लाख रुपया! यह जरूरत से ज्यादा हो गया! बेचने को ही थे और उस फकीर ने कहा, तुम्हारी मर्जी, फिर पछताओगे, जिंदगी-भर पछताओगे! तुम्हें मेरे दाम का पता नहीं है, मुझे पता है। तुम जरा ठहरो!

थोड़ी दूर चलने पर एक घसियारा मिला। वह एक घास की पोटली लिए सिर पर जा रहा था। और उस फकीर ने कहा, इससे पूछो कितने दाम देगा? उन्होंने कहा, यह क्या दाम देगा? उसने कहा तुम पूछो तो। फकीर को देखा उस घसियारे ने, नीचे से ऊपर तक, उसने कहा—भई ज्यादा तो मेरे पास नहीं है, मगर यह घास की पोटली दे सकता हूं। फकीर ने कहा, बेच दो! ठीक दाम मिल रहे हैं, अब चूको मत।

सिर ठोंक लिया होगा उन डाकुओं ने कि किस पागल के चक्कर में पड़ गए। मगर फकीर ठीक कह रहा है। इतना ही दाम है! ठीक दाम तो इतना ही है। लेकिन इस सिर को हम बचाए फिरते हैं। इस सिर को हम अकड़ाए फिरते हैं। मजा यह है कि यह सिर अकड़ा रहे तो दो कौड़ी इसके दाम नहीं हैं और यह सिर झुक जाए तो इसकी कीमत का क्या हिसाब! मगर यह बड़ा मजा है, यह झुके तो इसमें कीमत आती है। झुकने से कीमत आती है। झुकने से यह हीरों से तुलने-योग्य हो जाता है।

x x x x x x x

संतोष के आयाम

त्याग की असली कला क्या है? आज सब कुछ है। जो है, उसमें परम आनंद। कल है ही नहीं। कल के लिए बचाना क्या है जब कल है ही नहीं? कल के लिए इकट्ठा क्या करना है जब कल है ही नहीं? कल के लिए पकड़ना क्या है जब कल है ही नहीं?

मुहम्मद रोज रात सोने के पहले पत्नी को कहते थे—जो भी दिन में इकट्ठा हो गया हो, बांट दे। कल का क्या भरोसा है? हम हों न हों। और फिर जिसने आज दिया है, अगर कल होगा तो वह कल भी देगा। यही संतोष है। जिंदगी-भर तो पत्नी मानती रही।

फिर स्त्री आखिर स्त्री! मुहम्मद बीमार हुए। आखिरी घड़ियां करीब आ गयीं। उस रात पत्नी ने उनकी बात नहीं सुनी। उसे डर लगा। रात, आधी रात दवा की जरूरत पड़ जाए, वैद्य की जरूरत पड़ जाए तो फीस कहां से चुकाऊंगी? तो कुछ बचा लेना जरूर—ज्यादा नहीं बचाया, पांच रुपए, पांच दीनार छिपाकर रख दिए।

मुहम्मद आधी रात करवट बदलने लगे। पत्नी ने कहा—कुछ बेचैनी है? कोई तकलीफ है? दवा का इंतजाम करें? वैद्य को बुलाएं? उन्होंने कहा—न दवा की जरूरत है, न वैद्य की, मुझे ऐसा लगता है कि तूने घर में कुछ बचा रखा है। उससे मेरे प्राण अटके हैं। मैं क्या जवाब दूंगा परमात्मा को कि आखिरी दिन भरोसा नहीं किया।

पत्नी तो बहुत घबड़ायी। जल्दी से उसने पांच दीनार लाकर कहा कि मैंने

जरूर बचा लिए, मुझे क्षमा करें, इसी खयाल से कि कब जरूरत पड़ जाए वक्त बेवक्त, बिमारी-बूढ़ापा। मोहम्मद ने कहा जल्दी बांट दे! उसने कहा– मैं बांटूं भी तो किसको? आधी रात कौन होगा? मुहम्मद ने कहा–जिसने मुझे याद दिलायी है कि पांच रुपये घर में अटके हैं उसने किसी को जरूर भेजा होगा, तू दरवाजा तो खोल। और दरवाजा खोला तो देखा एक भिखारी खड़ा है–आधी रात! और उसने कहा कि मैं बड़ी मुसीबत में हूं, पांच रुपए की जरूरत है। वे पांच रुपए उस भिखारी को दे दिए गए; मुहम्मद ने चादर ओढ़ ली और कहते हैं चादर ओढ़ते ही उनके प्राण छूट गए।

संतोष के बड़े आयाम हैं। समय की दृष्टि से वर्तमान में जीना संतोष है। पकड़ की दृष्टि से जो मिल जाए उसे बिना पकड़े भोग लेना संतोष है। बिना पकड़े, बिना दावेदार हुए, बिना मालकियत जताए। परिग्रह की दृष्टि से अपरिग्रह संतोष है। श्रद्धा की दृष्टि से, यह भरोसा, कि जिसने आज दिया है कल भी देगा संतोष है। संतोष के गुण बहुत हैं। एक संतोष तुम्हारे जीवन को न-मालूम कितनी दिशाओं से रूपांतरित कर देगा।

x x x x x x x

बेईमान मन

मुल्ला नसरुद्दीन मस्जिद जाता है। मस्जिद के मौलवी को उसने कहा कि सुबह आने की बड़ी मुश्किल होती है, तय ही नहीं कर पाता, तय ही करने में समय निकल जाता है, कि जाऊं कि न जाऊं, जाऊं कि न जाऊं; मन में बड़ी दुविधा रहती है, अब आप तो जानते ही हैं। मन दुविधाग्रस्त है मेरा। मौलवी ने कहा–तू एक काम कर, परमात्मा पर छोड़ दे। उसने कहा–यह कैसे तय होगा और पक्का कैसे पता चलेगा कि परमात्मा की मर्जी क्या है? मुल्ला थोड़ा डरा भी, क्योंकि परमात्मा की मर्जी तो निश्चित ही यह होगी कि मस्जिद जाओ। मगर उसने कहा कि पक्का कैसे चलेगा कि परमात्मा की मर्जी क्या है? तो मौलवी ने कहा–तू ऐसा काम कर, एक रुपया रख ले और कहा कि अगर चित गिरे तो परमात्मा चाहता है मस्जिद जाओ, और अगर पुत गिरे तो परमात्मा चाहता है कि मस्जिद मत जाओ।

दूसरे दिन मुल्ला नहीं आया। रास्ते में बाजार में मौलवी को मिला, मौलवी ने पूछा–आए नहीं, भाई? उसने कहा कि आपने कहा था, वही किया। मौलवी ने कहा तो क्या हुआ? पुत गिरा रुपया? उसने कहा कि पहली बार में तो नहीं गिरा। सत्रह बार फेंकना पड़ा, तब पुत गिरा। मगर गिरा। जब पुत गिरा तब फिर मैं निश्चिंत सो गया; मैंने कहा कि अब जब परमात्मा की ही मर्जी है! आदमी बहुत बेईमान है। अपनी मर्जी को परमात्मा पर भी थोपने की चेष्टा करता है। वहीं से उसके सारे कष्टों का जन्मस्रोत है।

x x x x x x x

पात्रता का शोरगुल

एक तिब्बती कहानी मैंने सुनी है। एक फकीर बड़ा ख्यातिनाम, दूर-दूर से लोग उसके दर्शन को आते हैं और वे सभी एक प्रार्थना करते रहे और वर्षों तक एक ही प्रार्थना करते रहे कि आप शिष्य स्वीकार क्यों नहीं करते? तो वह फकीर कहता था–कोई पात्र मिले तो स्वीकार करूं। पात्र ही कोई नहीं दिखायी पड़ता। और उसने पात्र की ऐसी परिभाषा की थी कि अगर वैसी पात्रता का कोई व्यक्ति हो तो वह स्वयं ही गुरु हो जाएगा, वह किसी का शिष्य क्यों होगा? तो उसकी पात्रता की परिभाषा ही असंभव थी पूरा करना। न कोई पात्र मिलता था, न वह शिष्य बनाता था। सेवा-टहल के लिए एक आदमी उसके पास रहता था। वह भी शिष्य नहीं था। क्योंकि शिष्य तो वह बनाता ही नहीं था।

मरने के तीन दिन पहले एक दिन अचानक उसने आंख खोली सुबह और अपने उस आदमी को कहा जो उसकी सेवा-टहल करता था कि जा, पहाड़ से नीचे उतर और जो भी लोग शिष्य बनना चाहते हों, उन सबको ले आ। उसने पूछा–सबको! पात्रता का क्या होगा? उसने कहा–छोड़ पात्रता इत्यादि की बात, अब समय खोने को नहीं है। तू भाग! जो मिले, जो आने को राजी हो। उसको भरोसा नहीं आया, क्योंकि जिंदगी-भर बड़े-बड़े गुणी लोग आए थे, योग्य लोग आए थे, साधक आए थे, तपस्वी आए थे, वर्षों ध्यान किया था ऐसे लोग आए थे, चरित्रवान थे, शीलवान थे और इंकार कर दिए गए थे। क्योंकि वह बूढ़ा

पात्रता की ऐसी शर्तें बताता था कि कोई भी पूरी नहीं कर पाता था।

गया गांव में, डुंडी पीट दी की अब बूढ़ा गुरु किसी को भी शिष्य बनाने को तैयार है, जिसको भी आना हो! लोगों को यह भरोसा नहीं हुआ इस बात पर। बड़े-बड़े लौट आए थे खाली हाथ। मगर फिर कुछ लोग चल पड़े। उन्होंने कहा—चलो देखें, हर्ज क्या है, दर्शन ही हो जाएंगे! कोई भी चल पड़ा। एक आदमी बेकार था, नौकरी नहीं लगी थी, उसने सोचा—चलो, बैठे-बैठे यहीं क्या कर रहे हैं, चल पड़ो। एक की पत्नी मर गयी थी, वह वैसे ही उदास था, उसने कहा—चलो, मन ही बहल जाएगा। बाजार की छुट्टी थी आज, कुछ लोग खाली थे, उन्होंने कहा—हम भी चलते हैं। एक छोटा बच्चा भी साथ हो लिया। ऐसे कोई भी—एक तरह की भीड़—कोई पच्चीस एक आदमी पहुंच गए। भरोसा उनको किसी को भी नहीं था कि वह गुरु स्वीकार करेगा।

गुरु ने एक-एक को बुलाया, पूछा कि क्यों दीक्षा लेना चाहते हो? उनके उत्तर बड़े अजीब थे। एक ने कहा कि मेरी पत्नी मर गयी और मैं खाली बैठा था—सच तो यह है कि दीक्षा इत्यादि से मुझे कुछ लेना-देना नहीं है—मगर कोई भी व्यस्तता चाहिए। घाव गहरा है, किसी भी काम में उलझ जाऊं। तभी यह आदमी डुंडी पीट रहा था कि गुरु शिष्य स्वीकर करने को राजी है, जिसको भी आना हो। तो मैंने सोचा—चलो, बैठे-ठाले यही क्या करते हैं? चलो, बैठे-ठाले यह भी क्या बुरा है? बैठे-ठाले अध्यात्म! चल पड़ा।

दूसरे से पूछा—तू किसलिए आया है? उसने कहा कि मैं, नौकरी नहीं लगती। सोचा कि व्यर्थ बैठे रहने से तो राम-भजन ही ठीक है। शायद राम-भजन से ही नौकरी लग जाए! ऐसे लोग आ गए थे। किसी ने कहा—दुकान बंद है आज और किसी ने कुछ कहा। जो सेवा-टहल करता था, वह तो खड़ा देख रहा था, कि यह इस तरह के लोगों को कैसे शिष्य स्वीकार किया जाएगा? लेकिन गुरु ने सबको स्वीकार कर लिया।

वह जो आदमी सेवा-टहल करता था, वह चरणों में गिर पड़ा और उसने कहा—आप होश में हैं, आप क्या कर रहे हैं? बड़े-बड़े ज्ञानी, बड़े-बड़े ध्यानी लौटा दिए, और इस कचरे को! उस गुरु ने कहा, अब तू सच्ची बात समझ ले। तब मेरे पास देने को कुछ था ही नहीं। अपनी दीनता छिपाता था उनकी पात्रता की बात करके। उनकी पात्रता मैंने असंभव बना दी थी सिर्फ इसीलिए

कि न होगा कोई पात्र, न मेरी दीनता पता चलेगी। मेरी सुराही खाली थी। इसलिए मैं कहता था—लाओ सोने के पात्र, हीरे-जवाहरात जड़े पात्र, तो ढालूंगा सुराही। मेरी सुराही खाली थी और यह दीनता मैं किसी को बताना नहीं चाहता था; इसलिए मैंने पात्रता का इतना शोरगुल मचा रखा था। न कोई पात्र होगा, न मेरी खाली सुराही का पता चलेगा। ढालने की नौबत ही न आएगी। आज मेरी सुराही भर गयी है, अब क्या पात्र और क्या अपात्र! मिट्टी का पात्र हो तो चलेगा। और नहीं जिनके पास कोई पात्र हो—कुल्हड़ से ही पीना हो, हाथ से ही पीना हो, तो भी चलेगा। हाथ भी जिनके न हों तो उनके मुंह में ही ढाल दूंगा, तो भी चलेगा। आज पिलाना है, आज मेरे पास है। खयाल रखना, सद्गुरु तुम्हारी पात्रता से नहीं देता है। सद्गुरु अपने भराव से देता है। उसके भीतर घटा है; करेगा क्या? मेघ सघन हुआ है, बरसेगा। दिया जला है, रोशनी बिखरेगी। कमल खिला है, सुगंध उठेगी। ऐसा ही सहज।

x x x x x x x

कण-कण पुकारा

मैं अनुभव पर निश्चय ही जोर देता हूं। लेकिन अनुभव और अनुभव में भी भेद है। अनुभव अभिनय मात्र भी हो सकता है। तब ऊपर से तो लगता है अनुभव से गुजरे और भीतर से कोई अनुभव घटा नहीं।

कोई कोरी मुद्राओं से गुजर सकता है। तुम मुस्कुरा सकते हो और हृदय में मुस्कुराहट न हो। तो तुम्हें लगेगा मुस्कुराहट के अनुभव से गुजर गए; और हाथ कुछ सुवास लगेगी नहीं। तुम रो भी सकते हो। अभिनेताओं को नाटक के मंच पर रोते देखा न! आंसू भी टपक सकते हैं, झरझर आंसू टपक सकते हैं, और लगेगा कि तुम अनुभव से गुजरे रोने के; लेकिन तुम्हारे हृदय से आंसू न आ रहे हों तो अनुभव से तुम नहीं गुजरे। अक्सर ऐसा हो जाता है कि हम थोथी प्रक्रियाओं से गुजरते हैं और उसको अनुभव मान लेते हैं। फिर हाथ कुछ लगेगा नहीं।

मैंने सुना है, एक अद्भुत व्यक्ति हुआ, वह बड़ा व्याकरणविद था। साठ साल का हो गया, उसके पिता उसे रोज समझाते—पिता बूढ़े हो गए थे कोई

अस्सी वर्ष के—कि अब तो तू राम की सुध ले। अब तो प्रभु का स्मरण कर। मंदिर कब जाएगा?—तू भी बूढ़ा होने के करीब आ गया, साठ साल पूरे हो गए। वह व्याकरणविद सदा एक ही बात कहता कि बार-बार क्या राम का नाम लो या बहुवचन में एक दफे राम का नाम लो, काम हो जाएगा। एक बार जाऊंगा, समग्रता से नाम ले लूंगा।

साठवां वर्षदिन बेटे का मनाया जा रहा था, बाप ने उसे फिर याद दिलायी कि आज तो तू मंदिर जा ही, आज प्रभु का स्मरण कर! उसके बेटे ने कहा कि आपको मैं देख रहा हूं जीवन-भर से मंदिर जाते, प्रभु का स्मरण करते, पूजा-पाठ करते, कुछ होता दिखायी पड़ता नहीं। ऐसे ही मैं भी जाऊंगा-आऊंगा, ये धक्के खाने से क्या सार है? जाऊंगा एक दिन! और अगर आप कहते हैं आज ही चला जाऊं तो आज जाता हूं। लेकिन गया तो गया फिर बैठे प्रतीक्षा मत करना। एक बार नाम लूंगा। बाप को तो कुछ समझ में आया नहीं वह क्या कह रहा है, उसने तो बात मजाक में ही ली, कहा—जा, नाम ले!

बेटा मंदिर में गया और कहते हैं उसने एक ही बार नाम लिया राम का और नाम लेते ही गिर गया और समाप्त हो गया।

उस व्याकरणविद का नाम था—भट्टोजी दीक्षित। एक ही बार नाम लिया! इसको कहते हैं अनुभव! मगर समग्रता से लिया होगा। रोएं-रोएं से लिया होगा। कण-कण पुकारा होगा। स्वास-स्वास स्मरण से भर गयी होगी। सब दांव पर लगा दिया होगा। कहकर गया था एक बार नाम लूंगा और अब प्रतीक्षा मत करना। अब राम में जा रहा हूं तो अब काम की दुनिया में वापिस क्या लौटना है? बाप तो मजाक ही समझे थे; क्योंकि बाप तो जीवन-भर नाम लेते रहे थे।

तो मैं तुमसे कहता हूं अनुभव अनुभव में भेद है। बाप का भी अनुभव था मंदिर में पूजा करने का, प्रार्थना करने का। रोज गए थे, रोज वैसे ही वापिस लौट आए थे। कुछ बदला न था, कुछ नया न हुआ था, कुछ स्पर्श ही नहीं हुआ था। धूल भी नहीं झड़ी थी।

इन दोनों अनुभव का भेद ख्याल में लो। और जब मैं अनुभव पर जोर देता हूं तो मेरा मतलब—भट्टोजी दीक्षित वाला अनुभव। ऐसी थोथी प्रक्रियाओं से कुछ न होगा कि चले मंदिर, घंटा बजा आए, पूजा कर आए; एक औपचारिकता है रोज बैठकर अपने एक कोने में स्नान के बाद राम का जप कर लिया; इससे

कुछ भी न होगा। अपने को समग्रता से उंडेलोगे तब कुछ होगा। राम का नाम असली बात नहीं है, असली बात अपने को समग्रता से उंडेलना है। फिर तुमने राम को पुकारा कि कृष्ण को पुकारा कि रहीम को पुकारा, किसको पुकारा इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। वे तो सब नाम गौण हैं। परमात्मा का कोई नाम नहीं है। लेकिन समग्रता से पुकारा, बस, बात हो जाएगी।

x x x x x x x

उसकी प्रार्थना

मूसा एक जंगल से गुजरते थे और उन्होंने एक आदमी को झुके देखा। सांझ हो गयी थी, सूर्यास्त हो रहा था। वह आदमी गड़रिया था। उसकी भेड़ें भी उसी के पास-पास में-में करती घूम रही थीं और वह उन्हीं के बीच में बैठा प्रार्थना में लीन था। आकाश की तरफ हाथ जोड़े हुए थे उसने। बड़ी मस्ती में बातें कर रहा था। मूसा भी ठिठक गए उसके पीछे कि क्या कह रहा है? जो सुना तो मूसा बहुत घबड़ा गए। यह कोई प्रार्थना है!

वह आदमी कह रहा था कि हे प्रभु, तू बहुत अकेला होगा वहां! मुझे पता है कभी-कभी जब रात अकेले होता हूं, कैसा भय लगता है। तुझे भय नहीं लगता? तुझे भय लगता होगा, मैं आने को राजी हूं, तू मुझे बुला ले। मैं सदा तेरे साथ रहूंगा, तेरी छाया बन जाऊंगा। और कभी-कभी तुझे भूख भी लगती होगी और कोई भोजन देने वाला नहीं होता होगा। मैं तेरा भोजन भी बना दूंगा, मुझे भोजन बनाना भी आता है। और मैं तुझे खूब नहलाऊंगा, धुलाऊंगा; पता नहीं किसीने तुझे नहलाया-धुलाया कि नहीं; जूं पड़ गयी होंगी—मेरी भेड़ों में पड़ जाती हैं। मगर देख लो मेरी भेड़ों को, एक-एक की सफाई कर देता हूं। रात तेरे पैर भी दबा दूंगा, थक जाता होगा—इतना विराट तेरा विस्तार है, इसका निरीक्षण करते-करते थक जाता होगा, रात तेरे पैर भी दबा दूंगा। तेरे कपड़े भी धो दूंगा। तू जो कहेगा सब कर दूंगा, तू मुझे उठा ले, तू मुझे बुला ले।

मूसा के बर्दाश्त के बाहर हो गया जब उसने कहा तेरी जूं भी बीन दूंगा। मूसा ने कहा—ठहर, नासमझ! यह प्रार्थना कैसी प्रार्थना? बहुत प्रार्थनाएं मैंने सुनीं, यह तूने किससे सीखी, कहां से सीखी? वह तो घबड़ा गया, सीधा-सादा

आदमी, उसने कहा–मुझे क्षमा करो, मुझे कुछ पता नहीं, सीखी नहीं, खुद ही बना ली है। यह तो आप जानते ही हैं कि मैं तो गड़रिया हूं, पढ़ा-लिखा नहीं हूं, शास्त्र की मुझे क्या तमीज, संस्कार जैसी चीज मुझपर कोई पड़ी नहीं है, खुद ही बना ली है। अब भेड़ों से बात करता हूं, उतनी ही मेरी भाषा है। उसी भाषा को परिमार्जित करके परमात्मा से बात कर लेता हूं। आप मुझे सिखा दें। तो मूसा ने ठीक-ठीक यहूदियों की जो प्रार्थना है, वह सिखायी। बड़े प्रसन्न थे मूसा कि एक भटके हुए आदमी को रास्ते पर लाए।

और जब उस आदमी को छोड़कर मूसा चले, तो जैसे ही एकांत आया, जोर से एक आवाज आकाश में गूंजी कि मूसा, मैंने तुझे भेजा था कि तू लोगों को मेरे पास लाना, तू तो लोगों को मुझसे दूर करने लगा। मेरा प्यारा, तूने उससे उसकी प्रार्थना छीन ली! शब्द नहीं सुने जाते हैं, भाव सुने जाते हैं। तू वापिस जा, क्षमा मांग! उससे प्रार्थना सीख! मूसा तो कंप गए। भागे गए, उस गड़रिए को पकड़ा, उसके चरणों में गिरे और कहा–मुझे क्षमा कर दे, भाई! मैंने जो कहा उसे वापिस लेता हूं। परमात्मा की नजरों में तेरी प्रार्थना स्वीकार हो गयी है, हमारी प्रार्थना अभी स्वीकार नहीं हुई है। तू जैसा चाहे वैसा ही कर। और मुझे क्षमा कर दे। मुझसे बड़ी भूल हो गयी।

यह कहानी मधुर है, प्रीतिकर है, अनूठी है। सहज, स्वाभाविक, तब पूजा का अनुभव होता है। अभी तो तुम्हारी पूजा इतनी ओछी है!

x x x x x x x

गलत में सब राजी

मैंने सुना है, एक नगर में कुछ लोगों ने मिलकर एक मंदिर बनाया। सोचा किसकी मूर्ति स्थापित करें? खूब विचार करने के बाद ट्रस्टियों ने यही तय किया कि राम की मूर्ति स्थापित करें, तो राम की मूर्ति स्थापित कर दी। थोड़े-से लोग मंदिर आने लगे जो राम को मानते थे। लेकिन जो कृष्ण को मानते थे, वे मंदिर नहीं आए। तो उन्होंने सोचा कि राम की मूर्ति हटाकर कृष्ण की मूर्ति स्थापित करें। तो कृष्ण की मूर्ति स्थापित की तो राम के माननेवालों ने आना बंद कर दिया। कृष्ण को माननेवाले आने लगे।

फिर उन्होंने सोचा कि शिव की मूर्ति स्थापित करें। ऐसे वे हर साल मूर्तियां बदलते गए और हर साल आने वाले बदलते गए। मगर संख्या वही थोड़ी-की-थोड़ी रही।

फिर उन्होंने सोचा कि मूर्ति हटा दें, मंदिर को मस्जिद बना दें। तो मंदिर को मस्जिद बना दिया। तो हिंदुओं ने आना बंद कर दिया, मुसलमान आने लगे। मगर संख्या वही-की-वही रही। वे तंग आ गए। वे चाहते थे सारा गांव आए। वे चाहते थे सब आएं। उन्होंने एक बूढ़े बुजुर्ग से सलाह ली कि हम क्या करें? उसने कहा —तुम एक होटल खोल लो। उन्होंने होटल खोली और सब आए।

ऐसी मजेदार दुनिया है। यहां मंदिर-मस्जिद के बीच झगड़ा है, होटल में सब जाते हैं। होटल खोल ली होगी, नाइट क्लब बना दिया होगा, स्विमिंग पूल डाल दिया होगा, सब आने लगे। हिंदू भी आए, मुसलमान भी आए, ईसाई भी आए, सिख भी आए, पारसी भी आए, जैन भी आए, बौद्ध भी आए। फिर कौन करता है फिकर राम की और कृष्ण की, सब आए। गलत में सब राजी हैं। अद्‌भुत है यह दुनिया और सही में बड़े विवाद हैं। झूठ में सब संगी-साथी हैं, सत्य में बड़े संप्रदाय हैं। उपद्रव करना हो, सब इकट्ठे हो जाते हैं। प्रभु को स्मरण करना हो, कोई इकट्ठा नहीं होता।

मैंने सुना है, मुल्ला नसरुद्दीन एक स्त्री के प्रेम में था। उसको रोज एक प्रेमपत्र लिखता था। स्त्री भी हैरान थी, बड़े अद्‌भुत प्रेमपत्र लिखता था! फिर प्रेम टूटा तो उस स्त्री को मुल्ला ने जो अंगूठी दी थी उसे वापस की। मुल्ला ने कहा—और अगर तकलीफ न हो तो मेरे प्रेमपत्र भी वापस दे दो। उस स्त्री ने कहा—लेकिन प्रेमपत्र तुम क्या करोगे? उसने कहा यह तुम न पूछो। अब कोई मेरी जिंदगी तुम्हारे साथ खतम थोड़े ही हो गयी! अब ये प्रेमपत्र मुझे फिर लिखने पड़ेंगे। अब सच बात तुम्हें बता दूं, अब तो मामला खतम ही हो गया, ये प्रेमपत्र मैं खुद नहीं लिखता हूं, एक पंडित से लिखवाता हूं। इनका पैसा देना पड़ता है! ये कोई मुफ्त नहीं हैं! अब फिर से खर्चा करना पड़ेगा। ये तुम मुझे दे दो, यही मैं दूसरे नाम से चला दूंगा, तीसरे नाम से चला दूंगा, इनसे तो जिंदगी-भर काम चल जाएगा इतने पत्रों से। एक प्रेम क्या, न-मालूम कितने प्रेम कर लेंगे।

लेकिन जब तुम किसी पंडित से प्रेमपत्र लिखवाओगे तो झूठा नहीं हो

जाएगा? तुमने प्रार्थना भी तो पंडित से सीखी है। वह भी झूठी हो गयी। तुम्हारा अपना कुछ भाव पैदा होता है, या कि तुम बिल्कुल रेगिस्तान हो? तुम्हारे भीतर भाव का कोई मरुद्यान नहीं है? कोई झरना नहीं बहता? तुमने वेद से सीख ली प्रार्थना? तुमने कुरान से सीख ली प्रार्थना? ये प्रार्थनाएं काम नहीं पड़ेंगी। ये तुम्हें असली अनुभव में नहीं ले जाएंगी। तुम्हें अपनी प्रार्थना को जन्म देना होगा। तुम्हें अपनी प्रार्थना बनना होगा। तुम जब बनोगे प्रार्थना, तब सुनी जाएगी, तब अनुभव होगा।

x x x x x x x

अहेतुक स्मरण

मैं ने सुना है, एक तोता एक पंडित के पास था। खूब राम-राम जपता था। राम-राम ही जपता रहता था दिन-भर। बड़ा भगत तोता था। पड़ोस में एक महिला रहती थी, उसने भी एक तोता पाला। वह तोता गालियां बकता था। वह बड़ी परेशान थी। उसने पंडितजी को पूछा कि क्या करना? ये बड़ी बेहूदी चीज मैं घर ले आयी हूं। देखने में सुंदर था तो मैंने खरीद लिया और यह गालियां बकता है। और ऐसे मौके पर बक देता है; घर में मेहमान आए हों, फिर ये नहीं चूकेगा। यह कुछ-न-कुछ बीच में छेड़ देगा। भद्द हो जाती है। और मैं इसको लाख समझाती हूं राम-राम जपो, वह मुझे ही गाली देता है। राम-राम जपना तो दूर, मुंहफट जवाब देता है। उस पंडित ने कहा—तू एक काम कर। यह मेरा तोता बड़ा भगत है, ऐसा तोता मैंने नहीं देखा, सुबह ब्रह्ममुहूर्त में उठ आता है और जो राम-राम की गुहार लगाता है! सारे घर को जगा देता है, पास-पड़ोस के लोगों को जगा देता है। फिर उसकी गुहार चलती ही रहती है। यह पिछले जन्म का कोई बड़ा पहुंचा हुआ भगत है। तू ऐसा कर, अपने तोते को यहां ले आ। सत्संग का तो लाभ होता है न! उसको साथ रख दे तो कुछ दिन रह जाएंगे साथ दोनों तोते, सत्संग से सब ठीक हो जाएगा, यह बड़ा ज्ञानी है। यह तेरे तोते को सुधार देगा।

पंडित का तोता तो नर था और उस महिला का तोता मादा था। उनको एक ही पिंजड़े में रख दिया। मादा तोते ने दूसरे दिन गाली नहीं दी। लेकिन नर

तोता भी राम-राम नहीं बोला। पंडित थोड़ा हैरान हुआ। उसने पूछताछ की कि क्या हुआ, भगतजी क्या हुआ? उसने कहा—अब क्यों राम-राम जपें? इसीलिए तो राम-राम जपते थे, एक मादा चाहिए थी। और मादा से कहा—तू क्यों चुप है? उसने कहा—इसीलिए तो गालियां बकते थे, एक नर चाहिए था। न तो राम-राम जपने वाले को राम-राम से कोई मतलब था, न गालियां देनेवाले को गालियां देने से कोई मतलब था। दोनों के काम हल हो गए, झंझट मिट गयी, भगत जी भगत जी न रहे।

तुम जब राम को स्मरण करते हो किसी आकांक्षा से, तब तुम झूठ हो। जब तुम्हारे भीतर कोई हेतु होता है तब तुम झूठ हो। अहेतुक स्मरण ही पूजा है, पाठ है, प्रार्थना है। अहेतुक स्मरण! किसी और कारण से नहीं, सिर्फ मस्ती से। परमात्मा से और क्या कारण जोड़ना है! उसका नाम ही पर्याप्त आनंददायी है।

x x x x x x x

लंबी भ्रांति

प्रसिद्ध झेन गुरु इक्कू एक मंदिर में ठहरा। रात थी सर्द, उसे सर्दी लग रही थी, उसने बुद्ध की एक मूर्ति उठा ली—लकड़ी की मूर्ति थी—और जलाकर ताप ली। जब वह आग जलाकर ताप रहा था, मंदिर के पुजारी ने मंदिर में अचानक आग जली देखी तो वह जागा, भागा हुआ आया, देखा तो भरोसा नहीं आया उसे! इस आदमी को साधु समझकर ठहर जाने दिया था, यह ऐसा दुष्कृत्य करेगा कि भगवान की मूर्ति को जला देगा, इसकी तो कल्पना भी न थी! और इक्कू जाहिर साधु था, सारा देश उसे जानता था। पुजारी भौंचक्का खड़ा रह गया। इक्कू ने पूछा—इतने भौंचक्के क्यों खड़े हो? बैठो। आंच ताप लो, सर्दी बहुत है। उस पुजारी ने कहा—तुम पागल तो नहीं हो गए हो? भगवान की मूर्ति जला दी, महापाप किया है, इससे बड़ा पातक नहीं हो सकता। उसकी बात सुनकर इक्कू ने पास में पड़ी अपनी लकड़ी उठायी, अपना डंडा उठाया—और अब मूर्ति जो जल चुकी थी, अब राख-ही-राख थी—राख में डंडा घुमाने लगा, जैसे कुछ खोजता हो। पूछा उस पुजारी ने—अब क्या कर रहे हो? अब क्या खोज रहे हो? उसने

कहा–मैं बुद्ध की अस्थियां खोज रहा हूं। पुजारी को भी हंसी आ गयी। उसने कहा–तुम निश्चित पागल हो। तुम्हारा कोई कसूर नहीं, मेरी ही गलती हो गयी जो मैंने तुम्हें भीतर ठहराया। लकड़ी की मूर्ति में कहां बुद्ध की अस्थियां? अब इक्कू के हंसने की बारी थी। वह खिलखिला कर हंसा। उसने कहा–तो फिर दो मूर्तियां और हैं मंदिर में, उनको भी ले आओ, अभी रात बहुत बाकी है। तापेंगे, गपशप करेंगे।

जो मूर्ति बुद्ध की है, उसमें बुद्ध की अस्थियां भी नहीं हैं, बुद्ध की आत्मा तो कहां! उसमें तो कुछ भी नहीं है, पत्थर ही है। लेकिन हमारी आंखें रूप से अंधी हो गयी हैं। आकृति से हम इस तरह से जुड़ गए हैं कि पत्थर में भी आकृति होती है तो धोखा हो जाता है। हमने आकृतियों से इतना प्रेम किया है–कभी स्त्री से, कभी पुरुष से, कभी बेटे से, पत्नी से, पति से, मां से, बाप से, भाई से, मित्र से–हमने आकृतियों से इतना प्रेम किया है, और धीरे-धीरे हमें आकृति की ऐसी पकड़ हो गयी है कि हम पत्थर की मूर्ति को भी नमस्कार करने लगते हैं। क्योंकि आकृति वहां दिखायी पड़ती है। हम भूल ही गए कि आकृति के पीछे आत्मा से प्रेम किया जाता है। हमारी भ्रांति इतनी लंबी है, सदियों पुरानी है, जन्मों-जन्मों पुरानी है, भ्रांति ऐसी गहन होकर बैठ गयी है कि कोई भगवान की मूर्ति बनाकर रख देता है, आकृति दिखायी पड़ती है, हम झुके! कैसी हम मूढ़ता कर रहे हैं, इसका हमें बोध भी नहीं होता! होगा भी नहीं, क्योंकि और भी हजारों झुक रहे हैं। जब इतने लोग झुक रहे हैं तो हम सोचते हैं–ठीक ही होगा, इतने लोग गलत नहीं हो सकते।

x x x x x x x

मेरा बेटा

बुद्ध जब बुद्ध होकर अपने घर वापिस लौटे तो बुद्ध के बाप को भी दिखायी नहीं पड़ा कि वह बुद्धत्व को उपलब्ध हो गए हैं। कैसे दिखायी पड़े? अक्सर ऐसा हो जाता है, जिनसे हमारे बहुत लगाव हैं, आसक्तियां हैं, जिनको हमने सदा जाना है, उनमें तो दिखायी पड़ना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। बुद्ध के बाप को कैसे दिखायी पड़े? जानते

हैं सदा से इस छोकरे को! उनके ही घर में पैदा हुआ, उनसे ही पैदा हुआ, बचपन से जानते हैं। बुद्ध द्वार पर आकर खड़े हैं और बाप नाराज है। और बाप अपने गुस्से में बके जा रहे हैं—जैसे सब बाप बकते हैं। बाप यानी जो बके! वह बक रहे हैं, एकदम गुस्से में हैं कि तूने धोखा दिया, तूने गद्दारी की, मैं बूढ़ा हो गया हूं और मुझे छोड़ कर भाग गया, यह कोई बात है? एक ही तू मेरा बेटा है, इकलौता है, यह सारा राज्य तेरे लिए है, तेरे ही साथ मेरी सारी आशा जुड़ी है, मैं तुझे माफ कर दूंगा, तू अब भी लौट आ, अभी भी क्षमा मांग ले, मेरे पास बाप का दिल है, मैं तुझे प्रेम करता हूं, तेरी सब भूल-चूक माफ कर दूंगा, चल तू आ गया है, ठीक, घर लौट आया है, ठीक, यह क्या भिक्षापात्र इत्यादि लिए खड़ा है! हमारे परिवार में कभी किसीने भिक्षा नहीं मांगी, हम सदा-सदा से सम्राट होते रहे हैं। क्यों हमारी बेइज्जती करवा रहा है? तू इस गांव में भीख मांगेगा! यह तेरी राजधानी है, यहां गांव के गरीब-गुरबे तुझे भीख देंगे!—जो हमसे पलते हैं। थोड़ी शर्म खा, थोड़ी हमारी प्रतिष्ठा का ख्याल कर, थोड़ा मेरे बुढ़ापे की तरफ देख! बुद्धत्व दिखायी नहीं पड़ रहा, बेटा दिखायी पड़ रहा है। बाप नाराज है।

बुद्ध ने पता है क्या कहा? सब सुना और जब बाप थोड़े थक गए, तब बुद्ध ने कहा कि एक बार गौर से मुझे तो देखें! जो आपका घर छोड़कर गया था, वही मैं वापिस नहीं लौटा हूं। तब से गंगा का बहुत पानी बह गया। मैं कोई और ही होकर लौटा हूं। मैं आपसे कुछ मांगने नहीं आया हूं, कुछ देने आया हूं; ऋण चुकाने आया हूं। मुझे कोई संपदा मिल गयी है। आपका साम्राज्य ठीक, मुझे कोई और बड़ा साम्राज्य मिल गया है, मैं उसमें आपको भागीदार बनाने आया हूं। लेकिन बाप तो बाप! बाप ने कहा—छोड़, मैं तुझे सदा से जानता हूं! क्या मैं तुझे पहचानता नहीं? तू किसी और को कहना कि तू दूसरा होकर आया है, तू वही है। मेरा बेटा।

तुम समझते हो, कठिनाई क्या हो रही है? कठिनाई यह हो रही है—बाप सिर्फ आकृति को देख रहे हैं। भीतर जो घटना घट गयी है, जो नया आकाश खुला है, जो प्राण ने नया निखार लिया है, जो भीतर नया नाच उठा है, ऊर्जा का, जो नया स्वरनाद उठ रहा है, जो भीतर ओंकार का जन्म हुआ है, यह जो भीतर आज परमात्मा विराजमान हुआ है—यह मंदिर अब

खाली नहीं है, इस मंदिर का भगवान आ गया है—लेकिन इसको देखने के लिए तो शिष्यत्व चाहिए। देखा, बाप ने भी देखा, धीरे-धीरे झुके, धीरे-धीरे समझे, देखा, लेकिन पहले तो इतना ही दिखायी पड़ा कि यह मेरा बेटा वापिस लौट आया। मेरा बेटा—इतना ही दिखायी पड़ा।

x x x x x x x

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

सूफी फकीर हुआ—जुन्नैद। एक रात उसने सपना देखा कि वह परमात्मा के सामने खड़ा है। परमात्मा ने उससे कहा, कुछ पूछना तो नहीं? उसने कहा, एक ही जिज्ञासा है, बस एक ही जिज्ञासा है। मेरे गांव में सबसे ज्यादा सात्तिवक आदमी कौन है? तो परमात्मा से आवाज आयी उसे कि तेरा पड़ोसी। नींद खुल गयी उसकी—उसे धक्का इतना लगा। पड़ोसी! पड़ोसी ही तो सबसे बुरा आदमी होता है दुनिया में। पड़ोसी से बुरा तो कोई होता ही नहीं। पड़ोसी में कभी कोई अच्छाई दिखायी पड़ती ही नहीं किसी को।

जुन्नैद की नींद खुल गयी। पड़ोसी! यह तो कभी उसने सोचा ही नहीं था। वह तो सोच रहा था, उसके गुरु के संबंध में कहेगा परमात्मा। और भीतर कहीं यह भी आशा थी कि शायद मेरा ही नाम ले दे कि जुन्नैद, तेरे सिवा और कौन सात्विक आदमी तेरे गांव में? कहीं भीतर वह आकांक्षा थी। पड़ोसी! इस आदमी में तो इसने कभी कुछ अच्छा देखा ही नहीं था। मगर जब परमात्मा कहता है तो ठीक ही कहता होगा। लाख समझाने का उपाय किया, लेकिन नहीं समझा पाया कि पड़ोसी ही सबसे ज्यादा सात्विक है।

दूसरे दिन जब सोया, संयोग की बात फिर उसे सपना आया, फिर वह परमात्मा के सामने खड़ा है—शायद दिन-भर सोचता रहा था कि अब अगर मिलना हो जाए तो फिर पूछ ही लूं ठीक से। तो उसने कहा कि वह तो ठीक है, आपने जो कहा, एक सवाल और है, मेरे गांव में सबसे बुरा आदमी कौन है? तो परमात्मा ने फिर कहा—तेरा पड़ोसी। अब तो और उलझन हो गयी। पड़ोसी तो एक ही था। परमात्मा हंसा और उसने कहा, तू घबड़ा मत और बेचैन मत हो, सब देखने की बात है।

तू चाहे तो बुरे-से-बुरे आदमी को पड़ोसी में देख सकता है, और तू चाहे तो भले-से-भले आदमी को पड़ोसी में देख सकता है।

यह दुनिया वैसी ही हो जाती है जैसा तुम देखते हो, देखना चाहते हो। जब कोई गुरु से बचना चाहता है तो सब तरह की बुराइयां खोज लेता है। आसान है। कोई अड़चन नहीं। जुन्नैद के जीवन में एक और उल्लेख है। वह बगीचे में अपने काम कर रहा था, खुर्पी लिए कुछ खोद रहा था कि बीच में ही कुछ काम से उसे अंदर जाना पड़ा, खुर्पी वहीं छोड़ गया, लौटकर आया खुर्पी नदारद थी। तभी उसने चारों तरफ देखा, वही पड़ोसी जा रहा था। उसने कहा, हो न हो! उसने उसे गौर से देखा कि अगर चोरी इसने की होगी तो इसकी चाल से पता चलेगा। उसकी चाल बिल्कुल पक्के चोर की मालूम पड़ी। उसने गौर से देखा, जाकर और किनारे खड़ा हो गया दीवाल के, उसको बिल्कुल आंखें गड़ाकर देखा, और उसे लगा कि पड़ोसी घबड़ा भी रहा है, आंखें झुकाए है, शर्मिंदा है, उसे बिल्कुल पक्का हो गया। फिर दो-चार दिन वह देखता ही रहा, पड़ोसी जब भी निकले, यहां-वहां जाए; और हमेशा उसका भरोसा मजबूत होता चला गया कि इसी ने चुरायी है। हर बात ने इसी की गवाही दी। उसका चलना, उसका उठना, उसका बैठना, उससे जयरामजी भी की तो जैसे उसने डरकर जयरामजी का उत्तर दिया, हर चीज से पता चला कि चोर यही है।

पांचवें दिन वह बगिया में फिर काम कर रहा था कि मिट्टी में ही गड़ी हुई उसे अपनी खुर्पी मिल गयी। अरे, उसने कहा कि मैंने भी नाहक बेचारे पड़ोसी को दोष दिया—तभी पड़ोसी जा रहा था, रास्ते से निकल रहा था, उसने उसे गौर से देखा, ऐसा भला और प्यारा आदमी! चाल तो देखो, बिल्कुल साधुओं जैसी है! चेहरे का भाव तो देखो, कैसा प्रसादपूर्ण है!

तुम जो देखना चाहते हो, देख लोगे। तुम्हें आदमी में शैतान मिल सकता है, तुम्हें आदमी में भगवान मिल सकता है। फिर तुम्हें जिसके साथ रहना हो, उसे खोजो। कुछ लोग शैतानों में ही रहना पसंद करते हैं, वे सबमें शैतान खोजते रहते हैं। उनकी दुनिया नर्क हो जाती है। उनको हर आदमी बुरा दिखायी पड़ता है, फिर उन्हीं बुरे आदमियों के बीच रहना पड़ता है—जाओगे कहां, यही तो आदमी है! इन्हीं आदमियों के बीच कोई-कोई स्वर्ग में रह लेता है, क्योंकि वह हर आदमी में भला देखता है। हर आदमी में भला देखा जा सकता है।

प्रेम का माधुर्य

वह एक गरीब आदमी था। वर्षों से बुद्ध को निमंत्रण दे रहा था। फिर जब बुद्ध उसके गांव आए, तब वह सुबह तीन बजे रात ही आकर बुद्ध के दरवाजे पर खड़ा हो गया—नहीं तो और लोग आ जाते थे, पहले निमंत्रण दे जाते थे—वह तीन बजे जब बुद्ध उठे, आंख खोली, तो पहले उसे ही खड़ा पाया। पूछा कि तू भई, इतनी रात? उसने कहा कि आज तो मैं निमंत्रण पहला मेरा है, अभी कोई दूसरा आया नहीं है—जब वह निमंत्रण दे ही रहा था तभी सम्राट प्रसेनजित भी आ गए, लेकिन बुद्ध ने कहा अब देर हो गयी। पहला निमंत्रण तो उसका है। अब तो मैं उसके घर भोजन करूंगा।

निमंत्रण तो दे आया, लेकिन उसके घर भोजन तो कुछ था नहीं। बिहार का गरीब आदमी! .....बिहार कोई आज ही गरीब नहीं है, वह पहले ही से गरीब है। बिहार के लोग कुशल हैं गरीब होने में। सदियों से उन्होंने उसका अभ्यास कर रखा है। .....उसके पास खिलाने को तो कुछ था नहीं। बिहार में गरीब आदमी उन दिनों—और शायद अब भी यह करते हों—बरसात में जो कुकुरमुत्ते पैदा हो जाते हैं, उनको इकट्ठा कर लेते हैं। उनको सुखाकर रख लेते हैं। फिर उनकी साल-भर सब्जी बनाते हैं। अब कुकुरमुत्ता कोई खाने की चीज नहीं है, मगर पेट बिल्कुल खाली हो तो कुछ भी खाने की चीज हो जाती है! कुकुरमुत्ते कभी-कभी विषाक्त होते हैं, क्योंकि कहीं भी उगते हैं, अक्सर तो गंदी जगह में उगते हैं—इसीलिए तो कुकुरमुत्ता उसका नाम है, कि कुत्ता वहां पेशाब कर गया है। लोग समझते हैं कुत्ते के पेशाब करने से उगता है। मगर अक्सर गंदी जगहों में उगते हैं—कूड़ा-करकट भरा हो, लकड़ी इत्यादि पड़ी हों पुरानी, सीली, उनमें उग आते हैं।

कुकुरमुत्ते की सब्जी बनायी उसने—और तो उसके पास सब्जी थी भी नहीं—वह विषाक्त थी। जिनको बुद्ध से प्रेम है, जिनको बुद्ध से श्रद्धा है, जो सद्गुरु के साथ होना चाहते हैं, वे कहते हैं—बुद्ध ने देखा, लेकिन बिना कुछ कहे चुपचाप भोजन कर लिया। विषाक्त था, जहरीला था, कड़वा था। इतना ही नहीं कि भोजन कर लिया, उसे धन्यवाद दिया। उसके प्रेम को देखा, उसके भोजन को नहीं। भोजन कड़वा हो, लेकिन प्रेम ने उसे मधुर बनाया

था। और कभी-कभी ऐसा होता है, सम्राटों के घर भोजन करो और मीठा नहीं होता, क्योंकि प्रेम का माधुर्य नहीं होता।

लौटकर जब अपने झोंपड़े पर आ गए तो उन्होंने जो पहली बात कही अपने संन्यासियों से, वह यही कही कि जाकर गांव में खबर कर दो कि उस गरीब आदमी का बड़ा भाग्य है—दुनिया में दो सबसे बड़े भाग्यशाली हैं, वह मां जो सबसे पहला भोजन देती है बुद्धपुरुष को और वह व्यक्ति जो अंतिम भोजन देता है—यह बड़ा भाग्यशाली है, इसने अंतिम भोजन दे दिया। आनंद ने कहा—आप यह क्या कह रहे हैं? बुद्ध ने कहा—तू जा और गांव में डुंडी कर, नहीं तो मेरे मर जाने के बाद लोग उसे मार डालेंगे। उसे क्षमा नहीं कर सकेंगे। जाकर गांव में खबर कर दे कि वह धन्यभागी है।

अब जिसको श्रद्धा है, उसे यह दिखायी पड़ता है। यह जिसको श्रद्धा है, उसने यह कहानी लिखी। उसने यह बुद्ध का भीतरी भाव लिखा। जिसको श्रद्धा नहीं है, उसे लगता है यह अज्ञानी। इनको यह भी पता नहीं चल रहा है कि सामने रखा भोजन विषाक्त है, करने-योग्य नहीं है। यह सर्वज्ञ कैसे? यह त्रिकालज्ञ कैसे? इनका ज्ञान कैसा? अज्ञानी हैं, जैसे और सब अज्ञानी हैं वैसे ही अज्ञानी हैं। जिनको सामने खड़ी मौत नहीं दिखायी पड़ रही है, अपनी मौत नहीं दिखायी पड़ रही है, वे दूसरों को क्या अमृत के दर्शन करा सकेंगे?

अब तुम देखते हो, आदमी तरकीबें खोज ले सकता है! सदा से यह हुआ है। सदा यह होता रहेगा।

x x x x x x x

मारनहार तारनहार

सैकड़ों वर्ष पहले भारत का एक अद्‌भुत ज्ञानी बोधिधर्म चीन गया। उसने चीन में जाकर घोषणा कर दी कि मैं दीवाल की तरफ मुंह करके बैठा रहूंगा, जब तक कि असली शिष्य न आ जाएगा। वह नौ साल तक दीवाल की तरफ मुंह करके बैठा रहा। अपनी किस्म का आदमी था, झक्की था। दुनिया के सभी सद्‌गुरु झक्की होते हैं। झक्की का मतलब यह कि वे अपने तरह के होते हैं। उन जैसा आदमी फिर दुबारा नहीं होता। अद्वितीय

होते हैं, बेजोड़ होते हैं। फिर बोधिधर्म दुबारा नहीं होता। वैसा रंग और रूप परमात्मा एक ही बार लेता है।

वह नौ साल तक बैठा रहा दीवाल की तरफ मुंह करके! न मालूम कितने लोग आए, सम्राट आया देश का, उसने प्रार्थना की कि आप मेरी तरफ मुंह करें। आप दीवाल की तरफ मुंह क्यों किए हुए हैं? बोधिधर्म ने कहा कि मैंने सब चेहरों में सिर्फ दीवालें देखीं, थक गया, इससे यह दीवाल बेहतर। जब कोई चेहरा आएगा जिसमें मैं पाऊंगा दीवाल नहीं है, द्वार है, तो मैं मुंह फेरूंगा। तुम वह चेहरे नहीं हो, जाओ! रफा-दफा हो जाओ! बड़े-बड़े पंडित आए—होड़ लग गयी, कौन बोधिधर्म का मुंह अपनी तरफ फिरवा लेगा? बड़े ज्ञानी आए, मगर बोधिधर्म था कि दीवाल की तरफ बैठा रहा सो बैठा रहा।

फिर आदमी आया नौ साल के बाद। उस आदमी का नाम था—हुई नेंग। बर्फ पड़ रही थी, सर्दी के दिन थे, बर्फ जमी थी, बोधिधर्म बैठा है, उसके चारों तरफ बर्फ जम गयी है, और वह दीवाल की तरफ देख रहा है। हुई नेंग उसके पीछे आकर खड़ा हो गया, बोला भी नहीं। उसने यह भी नहीं कहा कि मेरी प्रार्थना है, मेरी तरफ देखिए। वह खड़ा ही रहा, खड़ा ही रहा, चौबीस घंटे खड़ा रहा। आखिर बोधिधर्म को ही पूछना पड़ा कि भाई, तुम यहां क्या कर रहे हो? पूछना ही पड़ेगा, चौबीस घंटे से यह आदमी खड़ा है, बोलता ही नहीं, बोधिधर्म भी डरा होगा कि मामला क्या है? कोई हमसे भी ज्यादा पागल आदमी आ गया! बर्फ जमी जा रही है, सर्द हुआ जा रहा है और यह खड़ा है। हुई नेंग ने कहा कि कुछ भेंट लेकर आया हूं आपके लिए। और तलवार निकाली और अपना हाथ काटकर भेंट कर दिया। कटा हुआ हाथ, लहू की धार और हुई नेंग ने कहा—फिरो मेरी तरफ, अन्यथा गर्दन उतार दूंगा। और कहते हैं तत्क्षण बोधिधर्म फिरा और कहा कि रुक भाई, गर्दन मत उतार देना। तेरी मैं प्रतीक्षा कर रहा था। जो गर्दन देने को तैयार है, उसकी गर्दन लेने की कोई जरूरत नहीं है। जो गर्दन देने को तैयार नहीं है, उसकी गर्दन लेने की जरूरत है।

इस भेद को ख्याल रखना, इस बात को ख्याल रखना। गुरु तब तक मारनहार है, जब तक तुम लड़ रहे हो, बचा रहे हो अपनी गर्दन। अपने हाथ में डाल लिए हो, वह जहां से चोट करता है वहीं से बचा लेते हो। जब तक तुम बचाव कर रहे हो, गुरु मारनहार है। जब तुम ढाल फेंक दोगे, गर्दन सामने रख दोगे, कहोगे—उठाओ तलवार और काट दो मेरी गर्दन, उसी क्षण गुरु तारनहार हो जाता है।

सारे धर्मों का सार

मेरे एक मित्र जापान में एक घर में मेहमान थे। बूढ़े आदमी, एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, वहां एक दर्शनशास्त्र के सम्मेलन में भाग लेने गए थे। घर में बड़ा शोरगुल था एक दिन, बड़ी तैयारियां हो रही थीं, तो उन्होंने पूछा—क्या मामला है? तो जिसके घर मेहमान थे उस मेहजबा ने कहा कि आज शादी है। आप भी सम्मिलित हों। तो वे भी बेचारे नहाए-धोए, अच्छे कपड़े पहने, तैयार हुए—जब शादी है तो ढंग से तैयार हो जाना! और जब भीतर से बाहर आए और बारात देखी तो बड़े हैरान हुए! बारात गुड्डा-गुड्डियों की थी। इस घर के बच्चों ने अपने गुड्डे का विवाह पड़ोस की गुड्डी से किया हुआ था। मगर बड़े बैंडबाजे बज रहे थे! और बड़ा उत्सव मनाया जा रहा था! और बारात भी चली और गांव के बड़े-बूढ़े भी सम्मिलित हुए। यह भी चले साथ, मगर बड़ी बेचैनी। और दूल्हे की जगह सिर्फ एक गुड्डा है—जापानी गुड्डा बनाने में कुशल होते हैं, बड़ा शानदार गुड्डा है—घोड़े पर सवार है। घोड़ा असली है, गुड्डा झूठा है। जब दूसरे पड़ोस में जहां बारात जानी थी पहुंच गयी, वहां भी बड़ा साज-सामान है, वहां भी लोग इकट्ठे हैं, स्वागत बारात का किया गया—जैसे असली बारात चल रही हो!

बर्दाश्त के बाहर हो गया तो पूछा कि मामला क्या है, मेरी कुछ समझ में नहीं आता। और बच्चे अगर निकालते यह जुलूस तो ठीक भी था, मगर बड़े-बूढ़े भी इसमें सम्मिलित हुए हैं। तो जिस बूढ़े के घर वे मेहमान थे, उसने कहा कि सभी बारातें खेल हैं। यह भी खेल है। तुम जिन असली बारातों में सम्मिलित हुए हो, वे भी खेल है। इसमें हर्ज क्या है? इसमें इतने परेशान क्यों हुए जा रहे हो? बच्चों को मजा आ रहा है, हम सम्मिलित हो गए हैं तो उनको और भी मजा आ रहा है। हम सम्मिलित हो गए हैं तो उनके खेल को बड़ी गंभीरता आ गयी है; खेल में बड़ा प्राण आ गया, बल आ गया। हम जानकर सम्मिलित हुए हैं कि खेल है। इसलिए हम सम्मिलित भी हैं और नहीं भी हैं। बच्चे अभी अनजाने हैं, उनको खेल नहीं है, असली बात हो रही है। वे भी बड़े हो जाएंगे तब समझ लेंगे कि खेल है।

इतना ही फर्क है। संसारी अभी बचकाना है, उसने खेल को असली

समझ लिया है। संन्यासी जाग गया, थोड़ा होश से भरा, प्रौढ़ हुआ, उसने खेल को खेल की तरह पहचान लिया। अब भागना कहां है, अब जाना कहां है? और अभी बहुते बच्चे हैं जो खेल में उलझे हैं, तुम भी उनके साथ खड़े हो। पर फर्क हो गया।

मुझसे लोग पूछते हैं–आप अपने संन्यासी को संसार छोड़ने को क्यों नहीं कहते? मैं क्यों कहूं छोड़ने को? परमात्मा ने ही नहीं छोड़ा है अभी तक संसार, संन्यासी क्यों छोड़े! कोई संन्यासी को परमात्मा से ऊपर जाना है! कोई परमात्मा से भी बड़े होने की आकांक्षा है! परमात्मा खेल खेल रहा है। इसलिए हम परमात्मा के खेल को लीला कहे हैं।

लीला का मतलब समझो।

लीला का मतलब समझ गए कि तुम सारे धर्मों का सार समझ गए। खेल है, बस गंभीरता से मत लो।

x x x x x x x

वह तीसरा

मुहम्मद के पीछे उनके दुश्मन पड़े थे। एक पहाड़ पर भागते हुए एक गुफा में मुहम्मद छिप गए। उनके साथ उनका एक दार्शनिक शिष्य है–बड़ा विचारक है, पंडित है। दोनों हैं, गुफा में छिपे बैठे हैं, दुश्मनों की घोड़ों की टाप पास आने लगी, घबड़ाहट बढ़ती जाती है, पर मुहम्मद निश्चिंत बैठे हैं। वह जो दार्शनिक है, वह बड़ा परेशान हो रहा है, पसीना-पसीना हो रहा है–यद्यपि सर्दी है, ठंडी है, गुफा बहुत शीतल है, मगर उसको पसीना बह रहा है। मुहम्मद निश्चिंत बैठे हैं। वह मुहम्मद से पूछता है–हजरत, आप बड़े शांत बैठे हैं, घोड़ों की टाप सुनायी नहीं पड़ती? मौत ज्यादा दूर नहीं है, यह वक्त शांत बैठने का नहीं है, हम दो हैं और दुश्मन कम-से-कम हजार है, बचना संभव नहीं है। मुहम्मद ने कहा–दो? हम तीन हैं। उस दार्शनिक ने चारों तरफ गुफा में देखा कि कोई और अंधेरे में तो नहीं छुपा बैठा है? वहां कोई भी नहीं है। उसने कहा–आप क्या कह रहे हैं, कोई नहीं है यहां! मुहम्मद ने कहा–तुम्हें दिखायी नहीं पड़ेगा और मैं दिखाना चाहूं

तो दिखा भी न सकूंगा। इसीलिए मैं निश्चिंत हूं और तुम निश्चिंत नहीं हो। परमात्मा है। हमारे होने-न-होने का कोई मूल्य ही नहीं है, उसके होने का मूल्य है। हजार नहीं दस हजार दुश्मन हों तो कोई फर्क नहीं पड़ता। मित्र साथ है। और उसकी अकेली मित्रता काम आती है, बाकी कोई चीज काम नहीं आती।

मगर दार्शनिक को इससे आश्वासन नहीं आया। तुमको भी नहीं आता। ये कवियों की बातें ठीक जब कविता करते हो, लेकिन यहां खतरा है जिंदगी को, यहां कहां कविता काम आएगी? यहां तलवारें चाहिए। यहां कविताओं से लड़ाई नहीं हो सकती। और टापें बढ़ती जाती हैं, आवाज करीब आती जाती है, ज्यादा देर नहीं है—भागने को कोई उपाय भी नहीं है क्योंकि आगे रास्ता समाप्त हो गया है, भयंकर खड्डा है, यह गुफा आखिरी है। और दुश्मन को भी यह गुफा दिखायी पड़ जाएगी, क्योंकि दुश्मन भी यहीं आकर रुकनेवाला है, इसी द्वार पर, क्योंकि इसके आगे खड्डा है। आगे दुश्मन भी जा नहीं सकता और यह बात असंभव है कि दुश्मन को यह गुफा दिखायी न पड़े। लेकिन थोड़ी ही देर में दिखायी पड़ा कि आवाज धीमी होने लगी घोड़ों की टापों की। दुश्मन किसी और रास्ते पर मुड़ गया, गुफा तक पहुंचा ही नहीं।

और मुहम्मद हंसने लगे, और उन्होंने कहा—देखा, तीसरे को देखा?

हवा की तरह है, लेकिन भक्त को अनुभव होने लगता है। अनुभव करने की क्षमता आ जाए। इस जगत में एक ही क्रांति है और क्रांति है कि तुम अनुभव कर लो कि तुम अकेले नहीं हो, परमात्मा तुम्हारे साथ है।

तुम्हारी चिंताएं क्या हैं? मुहम्मद निश्चिंत क्यों थे? साथी था दूसरा, वह चिंतित क्यों था? दोनों की परिस्थिति एक थी। वह साथी भी कह सकता था कि पहले परिस्थिति बदलो, फिर निश्चिंत बैठना। यह किस तीसरे की बात कर रहे हो? दुश्मन सामने है, अभी मुसीबत आ रही है, पहले इसका कुछ इलाज निकालो ये बातें काम नहीं आएंगी। लेकिन दोनों की मनोदशा अलग है। दोनों की भावदशा अलग है, परिस्थिति तो एक है कि दुश्मन आ रहा है, मौत सामने खड़ी है, खतरा है, भावदशा में भेद है। एक पतंग जमीन पर पड़ी है क्योंकि उसे हवा का सहारा नहीं है और एक पतंग आकाश में चढ़ गयी क्योंकि उसे हवा का सहारा है। दोनों पतंग हैं। भक्त की पतंग में और तुम्हारी पतंग में जरा फर्क नहीं है, सिर्फ भक्त की पतंग को उसकी अदृश्य शक्ति का सहारा है।

उस सहारे को पाने की तलाश करो। वही प्रार्थना है। उस सहारे को पाने की तलाश प्रार्थना है। उसे पुकारो! रोओ उसके लिए! उसकी प्रतीक्षा करो।

x x x x x x x

बेशर्त प्रेम

एक बाप के दो बेटे थे। बड़ा तो बड़ा योग्य था, कुशल था, साधुचरित्र था, आचरणवान था, पिता का बड़ा आदर करता था, छोटा एकदम लंपट था, जुआरी था, शराबी था, पिता के प्रति कोई आदर का भाव भी नहीं था, सुनता भी नहीं था, किसीकी मानता भी नहीं था, बगावती था, उपद्रवी भी था। अंततः एक दिन छोटे बेटे ने कहा कि हमें अलग-अलग कर दें क्योंकि मैं यह बकवास रोज-रोज नहीं सुनना चाहता कि तुम क्या करो और क्या न करो! मुझे जो करना है वही मैं करूंगा। मुझे जो होना है वही मैं होऊंगा। हमारा बंटवारा कर दें। बाप ने भी सोचा कि झगड़ा होगा मेरे जाने के बाद, इन दोनों बेटों में बहुत उपद्रव मचेगा, क्योंकि दोनों बिल्कुल दो अलग दिशाओं की तरफ यात्रा कर रहे हैं, उसने बंटवारा कर दिया। छोटा बेटा तो धन लेकर शहर चला गया। क्योंकि धन गांव में अगर हो भी तो क्या करो? छोटे-मोटे गांव में धन का करोगे क्या? गांव का धनी और गांव के गरीब में कोई बहुत फर्क नहीं होता। हो ही नहीं सकता, क्योंकि वहां उपाय नहीं है। धन का फर्क तो शहर में होता है, जहां उपाय है।

जैसे ही उसे धन हाथ लगा, वह तो शहर की तरफ चला गया, दस साल फिर लौटा ही नहीं। खबरें आती रहीं कि सब बरबाद कर दिया उसने जुए में, शराब में, वेश्यालयों में। फिर खबरें आने लगीं कि अब तो वह भीख मांगने लगा। फिर खबरें आने लगीं कि अब तो रुग्ण हो गया है, देह जर्जर हो गयी है, अब मरा तब मरा की हालत है। बाप बड़ा चिंतित है। रात उसे नींद नहीं आती। सोचता ही रहता है।

एक दिन खबर आयी कि बेटा वापिस आ रहा है। बेटे ने सोचा एक दिन—भीख मांगने खड़ा था एक द्वार पर और इंकार कर दिया गया; बड़ा महल था, महल देखकर उसे अपने घर की याद आयी, उसके पास भी बड़ा महल था, ऐसे ही नौकर-चाकर उसके पास भी थे, और आज यह दशा हो गयी

उसकी कि भीख मांगने खड़ा है और नौकर-चाकर भगा दिए हैं—उसने सोचा लौट जाऊं। क्षमा मांग लूंगा और पिता से कहूंगा, तुम्हारा बेटा होने के तो मैं योग्य नहीं हूं, इसलिए बेटे की तरह वापिस नहीं आया हूं, एक नौकर की तरह मुझे भी रख लो; इतने नौकर हैं तुम्हारे घर में, एक मैं भी तुम्हारे नौकर की तरह पड़ा रहूंगा। ऐसा सोच घर की तरफ वापिस चला। बाप को पता चला तो बाप ने बड़े सुस्वादु भोजन बनवाए और सारे गांव को भोज पर आमंत्रित किया—बेटा वापिस लौट रहा है। बैंडबाजे बजवाए, संगीत का आयोजन किया, जो भी श्रेष्ठतम संभव हो सकता था—गांव में दीए जलवा दिए, फूलों से द्वार सजाया। बड़ा बेटा तो खेत पर काम करने गया है, वह जब सांझ को लौट रहा था उसे गांव में बड़ा शोरगुल और बड़ा उत्सव मालूम पड़ा, उसने लोगों से पूछा—बात क्या है? किसी ने कहा—बात क्या है, अन्याय है, बात क्या है! तुम्हें जिंदगी हो गयी इस बूढ़े का पैर दबाते-दबाते, इसकी ही सेवा में रत रहे, तुम्हारा कभी स्वागत नहीं किया गया—न बंदनवार बांधे गए, न बाजे बजे, न तुम्हारे लिए भोजन बनाए गए, न तुम्हारे लिए भोज दिए गए, आज सुपुत्र घर आ रहा है! तुम्हारे छोटे भाई वापिस लौट रहे हैं! राजकुमार वापिस लौट रहे हैं!—सब बर्बाद करके। और यह अन्याय है। यह उसके स्वागत में इंतजाम किया जा रहा है।

बड़े भाई को भी चोट लगी। बात सीधी-साफ थी, गणित की थी, कि यह अन्याय है। गुस्से में आया घर, बाप से जाकर कहा कि मैं कभी आपसे मुंह उठा कर नहीं बोला, लेकिन आज सीमा के बाहर बात हो गयी, आज मुझे कहना ही होगा, आज मेरी शिकायत सुननी ही होगी, यह मेरे साथ अन्याय हो रहा है। बाप ने कहा—तू नाहक गरम हो रहा है। तू तो मेरा है, तू तो मेरे साथ एक है। तेरी मैंने कभी चिंता नहीं की। चिंता का कोई कारण तूने नहीं दिया। इसलिए तेरा कभी स्वागत भी नहीं किया—स्वागत की कोई जरूरत न थी। तेरा तो स्वागत है ही। लेकिन जो भटक गया था, वह वापिस लौट रहा है। तू अन्याय मत समझ। जो भटक गया था उसका वापिस लौटना स्वागत के योग्य है। वह इस घर में ऐसा भिखमंगे की तरह, तो शुभ न होगा। अपना सारा मान, अपनी सारी मर्यादा खोकर लौट रहा है, उसे मान वापिस देना है, मर्यादा वापिस देनी है। उसका सम्मान उसे वापिस देना है, उसका आत्मगौरव उसे वापिस देना है। अन्यथा वह इस घर में गौरवहीन होकर आएगा।

सब बर्बाद कर के आ रहा है, मुझे मालूम है। उचित तू जो कहता है वही

था, गांव भी यही कह रहा है कि उचित यही था कि उसके साथ यह सद् व्यवहार न किया जाए, लेकिन मैं कुछ और देखता हूं। यह सद् व्यवहार उसकी आत्म-प्रतिष्ठा बन जाएगा, वह फिर अपने गौरव को पा लेगा। वह फिर अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा। और एक बात का उसे भरोसा आ जाएगा कि बुरे हो कि भले, इसका बाप को फर्क नहीं पड़ता। प्रेम बुरे और भले का फर्क नहीं करता। प्रेम बेशर्त है। जीसस की इस कहानी को याद रखना।

x x x x x x x

आपे को काटना

बुद्ध एक गांव से गुजरते थे। वहां एक वेदी पर एक बकरा काटा जा रहा था। बड़ा शोरगुल मच रहा था। बड़ी भीड़भाड़ थी। लोग बड़े आनंदित थे—इनको लोग धार्मिक कृत्य समझते रहे हैं। अब भी चल रहे हैं। मनुष्य का अभाग्य! अब भी चल रहे हैं और इनको धार्मिक कृत्य समझा जा रहा है। बीसवीं सदी आ गयी, बुद्ध को गुजरे पच्चीस सौ साल हो गए, अभी भी बकरे काटे जा रहे हैं!

बुद्ध ने पूछा काटने वाले से कि जरा एक मिनट रुक जाओ, मुझे एक छोटी-सी बात का जवाब दे दो, इस बकरे को क्यों काटा जा रहा है? ब्राह्मण कुशल था, होशियार था—ब्राह्मण ही था, पंडित था—उसने कहा कि इसलिए काटा जा रहा है कि इस बकरे की आत्मा को स्वर्ग मिलेगा। धर्म में जो बलि जाता है, स्वर्ग जाता है। तो बुद्ध ने कहा—फिर तू अपने बाप को क्यों नहीं काटता? अपने को क्यों नहीं काटता? ला, तलवार दे, तेरी गर्दन उतारे देते हैं। तू अपने को ही काट ले, जब स्वर्ग जाने का इतना सरल उपाय है—और बकरा बेचारा जाना भी नहीं चाहता, वह कह रहा है कि मुझे नहीं जाना! जबरदस्ती बकरे को स्वर्ग भेज रहा है! और तुझे जाना है। तो वह ब्राह्मण घबड़ाया। उसने सोचा नहीं था कि बात इस ढंग से हो जाएगी। बुद्धों के पास बातों के ढंग बदल जाते हैं। कुछ और उसे सूझा नहीं तो बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा। बुद्ध ने कहा—यह अब कुछ मतलब की बात हुई। ऐसा ही तू अगर चरणों में गिरे परमात्मा के, परम सत्य के—चरणों में गिरने की बात है—तो सब हो जाएगा।

आपे को काटना है। और यह काटना ऐसा है कि खून की एक बूंद भी नहीं गिरती। यह काटना ऐसा है कि वस्तुतः कुछ काटना नहीं पड़ता, आपा है ही नहीं, सिर्फ भ्रांति है। तुम हो कहां? तुमने सिर्फ एक भ्रांति बना ली है कि मैं हूं। है तो परमात्मा ही, तुम तो सिर्फ उसी के सागर में एक तरंग हो; आज हो, कल नहीं हो जाओगे; कल नहीं थे, कल फिर नहीं हो जाओगे; सागर सदा है। आपे को जाने दो।

x x x x x x x

सौ चलते हैं एक पहुंचता है

तिब्बत की एक प्राचीन कथा है। एक गुरु ने अपने शिष्य को दूर पहाड़ों में एक आश्रम खोलने भेजा। जब आश्रम बन गया, उस शिष्य ने खबर भेजी कि मुझे एक सहायक की जरूरत है। खबर आयी, महीनों लगे खबर आने में क्योंकि पहाड़ बड़ा दूर था और पैदल ही यात्रा होती थी। जब खबर पहुंची तो गुरु ने कहा—ठीक। उसने अपने सारे शिष्य इकट्ठे किए और सौ शिष्य चुने। जो संदेशवाहक संदेश लेकर आया था, वह हैरान हुआ क्योंकि संदेश तो सिर्फ इतना था कि एक साथी और भेज दें। सौ भेज रहा है यह गुरु! उसने पूछा कि आप क्या कर रहे हैं, आपने पत्र ठीक से पढ़ा? एक मांगा है। गुरु ने कहा—सौ चलेंगे, तब एक पहुंचेगा। अगर एक को पहुंचाना हो तो सौ चुनने पड़ते हैं। बात उसे बिल्कुल जंची नहीं, हद् हो गयी, जरूरत से ज्यादा हो गयी! अगर इतना भी कहता कि दो चुन लेते हैं कि चलो एक तो कम-से-कम पहुंच जाए—कोई बीमार पड़ जाएगा, रास्ते में कोई शेर, सिंह खा जाएगा, कुछ झंझट हो जाए, न पहुंच पाए। सौ? यह जरा अतिशयोक्ति हो गयी। लेकिन जब गुरु कह रहा है तो संदेशवाहक कुछ बोल नहीं सका। सौ आदमियों को लेकर चला।

और जल्दी ही गुरु की बात प्रमाणित होने लगी। पहले ही गांव में सम्राट मर गया था—जहां वे रुके पहली रात—उसके बेटे का सिंहासन-आरोहण होने को था। नब्बे भिक्षुओं की जरूरत थी आशीर्वाद देने के लिए। परंपरागत उनका नियम था। नब्बे भिक्षु खोजना बहुत मुश्किल था। मगर उस दिन धर्मशाला में जब पहुंचे तो देखा सौ भिक्षु रुके हैं। सम्राट ने खबर भेजी कि

नब्बे भिक्षु तो रुक जाएं; जो भी तुम पुरस्कार मांगोगे, दूंगा। बड़ी मुश्किल पड़ी। कई डावांडोल हो गए। पुरस्कार इतना बड़ा था—जो भी मांगोगे! तो उन्होंने सोचा, अब जाने में सार क्या? और फिर उन्होंने कहा—संदेश एक के लिए आया था, यह तो अतिशयोक्ति है सौ को भेजना, यह फिजूल, बेमानी बात है, इसमें कुछ अर्थ नहीं है, यह गुरु झक्की है। उन्होंने हजार बहाने खोज लिए; और उन्होंने कहा कि फिर पुरस्कार लेकर हम पहुंच जाएंगे, महीने-पंद्रह दिन की देर सही! देर से क्या बना-बिगड़ा जा रहा है? और फिर दस तो जा रहे हैं! नब्बे तो वहां रुक गए।

दूसरे गांव में पड़ाव पड़ा। उस गांव का पुजारी मर गया था। और बहुत दिन से वे तलाश में थे कि कोई योग्य व्यक्ति मिल जाए; दस भिक्षु! गांव के लोगों ने प्रार्थना की कि पुजारी की जरूरत है। नौकरी भी अच्छी थी, रहने की सुविधा भी अच्छी थी, एक वहां रुक गया।

और ऐसे ही यात्रा चलती रही, आदमी खोते गए। आश्रम के पहुंचने के पहले आखिरी पड़ाव पर दो ही आदमी बचे। संदेशवाहक अब आश्वस्त होने लगा कि गुरु झक्की नहीं है। दो ही बचे जितना उसने सोचा था कि दो ही भेजना काफी है। मगर उस रात उनमें से एक कट गया। गांव में एक नास्तिक था, उसने आकर दोनों को चुनौती दे दी कि मैं यह कुछ नहीं मानता। यह बुद्ध-धर्म, यह बुद्ध, यह सब बकवास है। मैं चुनौती देता हूं तुम्हें शास्त्रार्थ की। एक ने तो दूसरे से कहा कि इस झंझट में मत पड़ो, हमें पहुंचना है अपने गुरु तक, यह शास्त्रार्थ कितने दिन चलेगा, क्या पता? अट्ठान्नबे साथी तो छूट ही गए हैं, अब और तुम न छूट जाना मगर एक तो बोला कि चाहे अब कुछ भी हो जाए! बुद्ध को कोई लांछना लगाए, यह मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। यह जीवन-मरण का सवाल है। अगर यह पूरी जिंदगी भी लग गयी इसी शास्त्रार्थ में तो भी कोई हर्ज नहीं है! तुम जा सकते हो। मैं तो इसको हरा कर ही आऊंगा। वह वहीं रुक गया। उसके साथी ने बहुत समझाया कि गुरु ने सौ भेजे हैं, कम-से-कम दो तो पहुंच जाओ। मगर उसने कहा अब कोई उपाय नहीं है, मैं चुनौती अंगीकार कर लिया हूं, यह हमारे धर्म पर हमला है, यह हमारी आत्मा पर चोट है, मैं नपुंसक नहीं हूं—वह बड़ी-बड़ी बातें करने लगा! उसने कहा कि मैं तो यहीं रुकूंगा। वह रुक ही गया।

जब संदेशवाहक पहुंचा, तो एक ही व्यक्ति पहुंचा था। लेकिन उस आश्रम को बनाने वाले गुरु ने कहा—तो एक साथी आ गया। यह तो बताओ गुरु ने भेजे कितने थे? संदेशवाहक ने कहा—क्या आपको भी यह ख्याल था कि गुरु ज्यादा भेजेगा? उसने कहा कि निश्चित। क्योंकि सौ चलते हैं तब कहीं एक पहुंचता है। मैंने एक मांगा था, क्योंकि अगर मैं सौ मांगता तो वह हजार भेजता। इसलिए मैंने एक मांगा था कि सौ तो वह भेजने ही वाला है। ऐसी ही यात्रा है। दुर्गम है। पहाड़ों की है। यहां अगर सौ साथी चलेंगे, तुम पाओगे एकाध बच जाए तो बहुत।

x x x x x x x

खुला आकाश

एक सम्राट ने जंगल में गीत गाते एक पक्षी को बन्दी बना दिया। गीत गाना भी अपराध है अगर आसपास के लोग गलत हों। उस पक्षी को पता भी न होगा कि गीत गाना भी परतन्त्रता बन सकता है। आकाश में उड़ने वाले वृक्षों पर बसेरा करने वाले उस पक्षी को सम्राट ने सोने के पिंजड़े में रखा था। उस पिंजड़े में हीरे-जवाहरात लगाये थे। करोड़ों रुपये का पिंजड़ा था वह। लेकिन जिसने खुले आकाश की स्वतन्त्रता जानी हो, उसके लिऐ सोने का क्या अर्थ है? हीरे-मोतियों का क्या अर्थ है? जिसने अपने पंखों से उड़ना जाना हो और जिसने सीमा रहित आकाश में गीत गाये हों, उसके लिए पिंजड़ा चाहे सोने का हो, चाहे लोहे का-बराबर है।

वह पक्षी सिर पीट-पीटकर रोने लगा। लेकिन सम्राट और उसके महल के लोगों ने समझा कि वह अभी गीत गा रहा है। कुछ लोग सिर पीटकर रोते हैं, लेकिन जो नहीं जानते वे यही समझते हैं कि गीत गाया जा रहा है। वह पक्षी बहुत हैरान था, बहुत परेशान था। फिर धीरे-धीरे सबसे बड़ी परेशानी तो उसे यह मालूम होने लगी, उसे डर हुआ कि कहीं ऐसा तो नहीं हो जायेगा कि पिंजड़े में बन्द रहते-रहते मेरे पंख उड़ना ही भूल जायें। कारागृह और कोई बड़ा नुकसान नहीं कर सकता, एक ही नुकसान कर सकता है कि पंख उड़ना ही भूल जायें। उस पक्षी को एक ही चिन्ता थी कि कहीं ऐसा न हो कि खुले आकाश के आनन्द की स्मृति ही मैं भूल जाऊं। फिर अगर पिंजड़े से मुक्त हो

भी गया तो क्या होगा। क्योंकि स्वतन्त्रता तो केवल वे ही जानते हैं जिनके प्राणों में स्वतन्त्रता का अनुभव और आनन्द है।

अकेले स्वतन्त्र हो जाने से कोई स्वतन्त्रता को नहीं जान लेता। अकेले खुले आकाश में छूट जाने से ही कोई स्वतन्त्र नहीं हो जाता। उस पक्षी को डर था, कहीं परतन्त्र रहते-रहते परतन्त्रता का मैं आदी न हो जाऊं। वह बहुत चिन्ता में था। कि कैसे मुक्त हो सकूं।

एक दिन सुबह-सुबह एक फकीर को गीत गाते उस पक्षी ने सुना। फकीर गीत गा रहा था कि जिन्हें मुक्त होना है उन्हें एक ही रास्ता है और वह रास्ता है सत्य। जिन्हें स्वतन्त्र होना है उनके लिए एक ही द्वार है और वह द्वार है सत्य। और सत्य क्या है, उस फकीर ने अपने गीत में कहा कि सत्य वह है जो दिखाई पड़ता है। जैसा दिखाई पड़ता है, उसे वैसा ही देखना, वैसा ही जानना, वैसा ही जीने की कोशिश करना, वैसा ही अभिव्यक्त करना सत्य है। और जो सत्य को उपलब्ध हो जाते हैं, वे मुक्त हो जाते हैं।

उसके गीत का यही अर्थ था। यही गाते हुए वह सड़कों पर गुजरता था। मनुष्यों ने तो नहीं सुना, लेकिन उस पक्षी ने सुन लिया। क्योंकि पक्षियों को अभी खुले आकाश का अनुभव है। मनुष्य तो खुले आकाश का सारा अनुभव ही भूल गया है। पक्षियों को तो पता है कि उनके पंख उड़ने के लिए हैं। मनुष्य को तो पता ही नहीं कि उनके पास भी पंख हैं वे भी उड़ सकते हैं - किसी आकाश में।

महावीर भी चिल्लाते हैं, बुद्ध भी चिल्लाते हैं, क्राइस्ट भी चिल्लाते हैं, कृष्ण भी चिल्लाते हैं, लेकिन सुनता कौन है? वह फकीर गाँव में चिल्लाता रहा, सुना एक पक्षी ने, आदमियों ने नहीं। और उस पक्षी ने उसी दिन सत्य का एक छोटा-सा प्रयोग किया। सम्राट महल के भीतर था, कोई मिलने आया था। पहरेदारों से सम्राट ने कहलवाया-कह दो कि सम्राट घर पर नहीं हैं तभी उस पक्षी ने चिल्ला कर कहा-नहीं, सम्राट घर पर है और यह सम्राट ने ही कहलवाया है पहरेदारों से कह दो मैं घर पर नहीं हूँ।

सम्राट तो बहुत नाराज हुआ। सत्य से भी लोग नाराज होते हैं, क्योंकि सभी लोग असत्य में जीते हैं। और वे जो सम्राट हैं-चाहे सत्ता के, चाहे धन के, चाहे धर्मों के, जिनके हाथों में किसी भी तरह की सत्ता है, वे सभी सत्य से बहुत

नाराज होते हैं, क्योंकि सत्ता हमेशा असत्य के सिंहासन पर विराजमान होती है। इसलिए सत्ताधारी हमेशा सत्य को सूली पर चढ़ा देते हैं, क्योंकि सत्य अगर जीवित रहे तो सत्ताधारियों की सूली बन सकता है। सम्राट ने कहा–पक्षी को तत्क्षण महल के बाहर कर दो। महलों में सत्य का कहाँ निवास! वृक्षों पर बसेरा हो सकता है, लेकिन महलों में बसेरा सत्य के लिए बहुत कठिन है। वह पक्षी बाहर कर दिया गया, लेकिन उस पक्षी को तो मन की मुराद मिल गई। वह तो खुले आकाश में नाचने लगा। उसने कहा–ठीक कहा था उस फकीर ने कि अगर मुक्त होना है तो सत्य ही एकमात्र द्वार है।

वह पक्षी तो नाचता था, लेकिन एक तोता एक वृक्ष पर बैठकर रोने लगा और बोला–पागल पक्षी! तू नाचता है, सोने के पिंजड़े को छोड़कर। सौभाग्य से ये पिंजड़े मिलते हैं। ये सभी को नहीं मिलते। पिछले जन्मों के पुण्यों के कारण मिलते हैं। हम तो तरसते थे उस पिंजड़े के लिए, लेकिन तू नामसझ है, पिंजड़ों में रहने की भी कला होती है। पिंजड़े में रहने की पहली कला यह है कि मालिक जो कहे वही करना। यह सोचना ही नहीं कि यह सच है या झूठ। जिसने सोचा वह फिर पिंजड़ों में नहीं रह सकता, क्योंकि विचार विद्रोह है और जिसके जीवन में विचार का जन्म हो जाता है, वह परतन्त्र नहीं रह सकता। तूने विचार क्यों किया पागल पक्षी? विचार करना बहुत खतरनाक है। समझदार लोग कभी विचार नहीं करते। समझदार लोग कारागृहों में रहते हैं और उस कारागृह को ही भवन समझते हैं, मन्दिर समझते हैं। अगर ज्यादा ही तकलीफ थी तो भीतर से ही अपने पिंजड़े के सींकचों को सजा लेना था। सजाया हुआ पिंजड़ा घर जैसा मालूम पड़ने लगता है। ध्यान रहे, अनेक लोग ऐसे ही पिंजड़े को सजाकर उन्हें घर समझते रहते हैं।

उस पक्षी ने तो सुना भी नहीं, वह तो खुशी से नाच रहा था, उसके पंख हवाओं में डोल रहे थे, वह तो खुले आकाश में आ गया था। लेकिन उस तोते ने कहा कि पिंजड़े में रहने का मजा लेना है तो तोतों से कला सीखो। हम वही कहते हैं जो मालिक कहते हैं। हम कभी वह नहीं कहते जो सच है। हम इसकी चिन्ता नहीं करते कि सत्य क्या है? हम तो वही कहते हैं जो मालिक कहते हैं। मालिक क्या करता है, यही नहीं कहना है। अपनी आँख से देखना नहीं, अपने विचार से सोचना नहीं। मालिक की आँख से देखना और मालिक

के विचार से सोचना। तोता यह सब चिल्लाता रहा और खुले पिंजड़े में, जहाँ से वह पक्षी छूट गया था, तोता जाकर भीतर बैठ गया।

पिंजड़े को द्वारपाल ने बंद कर दिया। वह तोता अब भी उस महल के पिंजड़े में हैं। अब वह वही करता है जो मालिक कहता है। वह सदा वहीं बन्द रहेगा, क्योंकि मुक्त होने का एक ही रास्ता है और वह रास्ता है सत्य। और तोते और सब कुछ बोलते हैं, लेकिन सत्य कभी नहीं बोलते। और तोते तो ठीक, यहाँ आदमियों में भी तोतों की इतनी बड़ी तादाद है जिसका कोई हिसाब नहीं। ये तोते भी वही बोलते हैं जो मालिक कहते हैं। हजारों-हजारों साल से, ये वही बोलते जाते हैं जो मालिक कहते हैं।

शास्त्रों के नाम पर तोते बैठ गये हैं, सम्प्रदायों के नाम पर तोते बैठ गये हैं, मन्दिरों के नाम पर तोते बैठ गये हैं। सारी दुनिया, सारी आदमियत तोतों की आवाज से परेशान है। उन्हीं की आवाज सुन-सुनकर हम सब भी धीरे-धीरे तोते हो जाते हैं और हमें पता भी नहीं रहता कि खुला आकाश भी हैं, हमारे पास पंख भी हैं, आत्मा भी है, मुक्ति भी है।

x x x x x x x

आध्यात्मिक दासता

मैं ने सुना है, एक जादूगर था और वह जादूगर भेड़ों को बेचने का काम करता था। भेड़ें पाल रखी थीं उसने और उनको बेचता था, उनके माँस को बेचता था। उन्हें खिला-पिलाकर मोटा करता था, जब वे चर्बी माँस से भर जातीं तब उनको काटकर बेचता था, लेकिन उसने सारी भेड़ों को बेहोश करके एक बात सिखा दी कि तुम सब भेड़ नहीं हो, शेर हो। सारी भेड़ें को बेहोश करके एक बात सिखा दी कि तुम सब भेड़ नहीं हो। सारी भेड़ें अपने को शेर समझती थीं। हालांकि दूसरी भेड़ों को भेड़ ही समझती थीं, पर खुद को शेर समझती थीं, इसलिए दूसरी भेड़ें जब कटती थीं तब वे अपने मन में सोचती थीं-हम तो शेर हैं, हमारे कटने का तो कोई सवाल ही नहीं है। जो भेड़े हैं वह कटती हैं, और वह कट रही हैं और इसलिए हर रोज भेड़ें कटती जाती थीं, लेकिन बाकी भेड़ों को जरा भी चिन्ता

सवार नहीं होती थी। वे अपने को शेर ही समझती चली जाती थीं। जब उनकी कटने की बारी आती थी, तभी पता चलता था कि बुरा हुआ। लेकिन तब बहुत समय बीत चुका होता था, तब कुछ भी नहीं किया जा सकता था। भागने का वक्त निकल चुका होता था।

अगर उन्हें दूसरी भेड़ों को कटते देखकर ख्याल आ गया होता कि हम भी भेड़ हैं तो शायद वे भेड़ें जाग गयी होतीं। उन्होंने बचाव का कोई उपाय कर लिया होता, लेकिन उनको भ्रम था कि वह शेर हैं। जब कोई भेड़ अपने को शेर समझ ले तब उससे कमजोर भेड़ खोजनी दुनिया में बहुत मुश्किल है, क्योंकि उसे यह ख्याल ही मिट गया कि मैं भेड़ हूँ। उस जादूगर से किसी ने कहा कि तुम्हारी भेड़ें भागती क्यों नहीं? उसने कहा–मैंने उनके साथ वही काम किया जो हर आदमी ने अपने साथ कर लिया है। जो हम नहीं हैं, वहीं हमने समझ लिया है। जो ये नहीं हैं, वही मैंने इनको समझा दिया है।

हर आदमी अपने को समझता है कि मैं स्वतन्त्र हूँ। इससे बड़ा झूठ और कुछ भी नहीं हो सकता। और जब तक आदमी यह समझता रहता है कि मैं स्वतन्त्र हूँ, मैं एक स्वतन्त्र आत्मा हूँ, तब तक वह आदमी स्वतन्त्रता की खोज में कुछ भी नहीं करेगा। इसलिए पहला सत्य समझ लेना जरूरी है कि हम परतन्त्र हैं। हम का मतलब पड़ोसी नहीं, हम का मतलब 'मैं' हम का मतलब यह नहीं कि और लोग जो मेरे आस-पास बैठे हों, हम का मतलब वे नहीं, 'मैं'।

मैं एक गुलाम हूँ और इस गुलामी की जितनी पीड़ा है, उस पूरी पीड़ा को अनुभव करना जरूरी हैं। इस गुलामी के जितने आयाम हैं, जितने डाइमैन्शड हैं, जितनी दिशाओं से यह गुलामी पकड़े हुए हैं, उन दिशाओं को भी अनुभव कर लेना जरूरी है। किस-किस रूप में वह गुलामी छाती पर सवार है, उसे समझ लेना जरूरी हैं। इस गुलामी की क्या-क्या कड़ियाँ हैं, वे देख लेना जरूरी है। जब तक हम इस आध्यात्मिक दासता से पूरी तरह परिचित नहीं हो जाते, तब तक इसे तोड़ा भी नहीं जा सकता।

x x x x x x x

चौथा उत्तर

एक फकीर एक गाँव में ठहरा हुआ था। उस गाँव के लोगों ने उस फकीर को कहा कि तुम आकर हमें नहीं बतलाओगे कि ईश्वर है या नहीं? उस फकीर ने कहा–ईश्वर! ईश्वर से तुम्हें क्या प्रयोजन हो सकता है? अपना काम करो। ईश्वर से किसी को भी कोई प्रायोजन नहीं है। अगर ईश्वर से कोई प्रयोजन होता तो यह दुनिया बिल्कुल दूसरी ही दुनिया होती।

यह ऐसी दुनिया नहीं हो सकती थी, कितनी कुरूप, इतनी गन्दी, इतनी बेहूदा। ईश्वर से हमारा प्रयोजन होता तो हमने यह सारी दुनिया और तरह की कर ली होती। नहीं, इस दिशा में कोई प्रयोजन नहीं है। वे जो मन्दिरों में बैठे हैं उन्हें भी नहीं है। वे जो पुजारी, साधु–सन्यासी और गुरुओं को जत्था खड़ा हुआ है, उन्हें भी नहीं है। वे जो नारियल फोड़ रहे हैं दीवारों के सामने, पत्थरों के सामने, उन्हें भी नहीं है।

अगर ईश्वर से हमें मतलब होता तो यह दुनिया बिल्कुल दूसरी हो गई होती, क्योंकि ईश्वर से मतलब रखने वाली दुनिया इतनी गन्दी और कुरूप नहीं हो सकती। उस फकीर ने कहा–क्या मतलब है तुम्हें ईश्वर से? अपना काम–धाम देखो। बेकार समय मत गंवाओ। लेकिन लोग नहीं माने। उन्होंने कहा–आज छुट्टी का दिन है, और आप जरूर चलें। फकीर ने कहा–अब मैं समझा, चूंकि छुट्टी का दिन है, इसलिए ईश्वर की फिक्र करने आये हो! छुट्टी के दिन लोग ईश्वर की फिक्र करते हैं, क्योंकि जब कोई काम नहीं होता। और आदमी से बेकार नहीं बैठा रहा जाता तो कुछ न कुछ करता है, ईश्वर के लिए कुछ करता है। बेकार आदमी कुछ न कुछ करता है – माला ही फेरता है। उस फकीर ने कहा–अच्छा, छुट्टी का दिन है तब ठीक है, मैं चलता हूँ। लेकिन ईश्वर के संबंध में कहूँगा क्या? क्योंकि ईश्वर के संबंध में आज तक कुछ भी नहीं कहा जा सका। जिन्होंने कहा है, उन्होंने गलती की। जो जानते थे, वे चुप रह गये। अब मैं मूर्ख बनूँगा, अगर मैं कुछ कहूँ, क्योंकि उससे सिद्ध होगा कि मैं नहीं जानता हूँ। और तुम कहते हो कि कुछ कहो। खैर, मैं चलता हूँ।

वह मस्जिद में गया। उस गाँव के लोगों ने बड़ी भीड़ इकट्ठी कर ली थी। भीड़ को देखकर बड़ा भ्रम पैदा होता है। ईश्वर को समझने के लिए

भीड़ इकट्ठी हो जाये तो भ्रम पैदा होता है कि लोग ईश्वर को समझना चाहते हैं। उस फकीर ने कहा–इतने लोग ईश्वर में उत्सुक हैं तो मैं एक प्रश्न पूछ लूं पहले, तुम ईश्वर को मानते हो? ईश्वर है? सारे गाँव के लोगों ने हाथ उठा दिये ऊपर कि हम मानते हैं ईश्वर को, ईश्वर है। उस फकीर ने कहा–फिर बात खत्म, जब तुम्हें पता ही है तब मेरे बोलने की कोई जरूरत नहीं। मैं वापिस जाता हूँ।

गाँव के लोग मुश्किल में पड़ गये। अब कुछ उपाय भी न था। कह चुके थे, जानते तो नहीं थे। लेकिन कह चुके थे कि जानते हैं, हाथ हिला दिया था। अब एक दम इन्कार करेंगे तो ठीक भी नहीं है। कौन जानता है? आप जानते हैं? लेकिन अगर कोई पूछेगा कि क्या ईश्वर है? तो आप भी हाथ उठा देंगे। ये हाथ झूठे हैं। और जो आदमी ईश्वर के सामने तक झूठ बोलता है, उसकी जिन्दगी में अब सच का कोई उपाय नहीं हो सकता। जो ईश्वर के लिए झूठी गवाही दे सकता है कि हाँ, मैं जानता हूँ, ईश्वर है और उसे कोई भी पता नहीं। उसकी जिन्दगी में कभी कोई किरण नहीं उतरी ईश्वर की। उसकी जिन्दगी में कभी कोई प्रार्थना नहीं आई ईश्वर की। उसकी जिन्दगी में कभी फूल नहीं खिला ईश्वर का और वह कहता है कि हाँ, ईश्वर है। वह कभी भीतर नहीं देखता कि मैं सरासर झूठ बोल रहा हूँ। मुझे कुछ भी पता नहीं है।

बाप बेटों से झूठ बोल रहे हैं। गुरु शिष्यों से झूठ बोल रहे हैं। धर्मगुरु अनुयायियों से झूठ बोल रहे हैं। और उन्हें कुछ भी पता नहीं है। वह है या नहीं। किसकी बात कर रहे हो? उनको अगर जोर से हिला दो तो उनका सब ईश्वर बिखर जाएगा। भीतर से कहीं कोई आवाज नहीं आयेगी कि वह है। शायद जब वह आपसे कह रहे हैं कि 'है'–तभी उनके भीतर कोई कह रहा है कि अजीब बात कर रहे हो, पता तो तुम्हें बिल्कुल भी नहीं है।

उस फकीर ने कहा कि जब तुम्हें पता ही है तो बात खत्म हो गई। लेकिन मैं हैरान हूँ। कि इस गाँव में ईश्वर को जानने वाले इतने लोग हैं तो यह गाँव दूसरी तरह का हो जाना चाहिए था, लेकिन तुम्हारा गाँव वैसा ही है जैसे मैंने दूसरे गाँव देखे। गाँव के लोग बहुत चिंतित हुए। उन्होंने कहा अब क्या करें? उन्होंने कहा अगली बार हम चलें। अगले शुक्रवार को उन्होंने फिर फकीर के पैर पकड़ लिए और कहा–आप चलें और ईश्वर को समझायें। उसने कहा– मैं पिछली बार गया था और

तुम्हीं लोगों ने कहा था कि ईश्वर को तुम जानते हो। बात खत्म हो गई, अब उसके आगे बताने को कुछ भी नहीं बचता। फिर? उन लोगों ने कहा–महाशय, वे दूसरे लोग रहे होंगे। हम गाँव के दूसरे लोग हैं। आप चलिए और हमें समझाइए। हमें कुछ भी पता नहीं। ईश्वर को हम जानते ही नहीं उस फकीर ने कहा–धन्यवाद तेरा परमात्मा। ये वही के वहीं लोग हैं। शक्लें मेरी पहचानी हुई हैं, लेकिन ये बदल रहे हैं। असल में धार्मिक आदमी के बदलने में देर नहीं लगती। धार्मिक आदमी से ज्यादा बेईमान आदमी खोजना बहुत मुश्किल है। वह जरा में बदल सकता है। दुकान में वह कुछ और होता है, मन्दिरों में कुछ और हो जाता है। मन्दिर में कुछ ओर होता है, बाहर निकलते ही कुछ और हो जाता है।

उस फकीर ने कहा–धन्यवाद है भगवान्–बदल गये लोग, ठीक हैं। जब दूसरे ही हैं, तो मैं चलूंगा। वह गया, वह मस्जिद में खड़ा हुआ और उसने कहा–दोस्तों, मैं फिर वहीं सवाल पूछता हूँ, क्योंकि दूसरे लोग आज आये हुए हैं। हालांकि सब चेहरे मुझे पहचाने हुए मालूम होते हैं। क्या ईश्वर है? उस मस्जिद के लोगों ने कहा–नहीं है, ईश्वर नहीं है। ईश्वर को हम न मानते हैं, न जानते हैं। अब आप बोलिए। उस फकीर ने कहा–बात खत्म हो गयी। जब है ही नहीं, तब उसके संबंध में भी बात क्या करनी है? प्रयोजन क्या है अब बात करने का? किसके संबंध में पूछते हो मित्रो? जो है ही नहीं उसके संबंध में? कौन ईश्वर ? कैसा ईश्वर? मस्जिद के लोगों ने कहा–यह तो मुश्किल हो गयी। इस आदमी से पार पाना कठिन है। उसने कहा–जाओ अपने घर। अब कभी भूलकर यहाँ मस्जिद में मत आना। किसलिए आते हो यहाँ? जो है ही नहीं उसकी खोज करने? और तुम्हारी खोज पूरी हो गई, क्योंकि तुम्हें पता चल गया कि वह नहीं है। खोज पूरी हो गई, तुमने जान लिया कि वह नहीं है। अब बात खत्म हो गई। अब कोई आगे यात्रा नहीं, मुझे क्षमा कर दो, मैं जाता हूँ। गाँव के लोगों ने कहा–क्या करना पड़ेगा? इस आदमी से सुनना जरूरी है। जरूर कोई राज अपने भीतर छिपाये हुए हैं। यह कोई साधारण आदमी नहीं है, क्योंकि साधारण आदमी तो बोलने के लिए आतुर रहता है। आप मौका दो और वह बोलेगा। और यह आदमी बोलने के मौके छोड़कर भाग जाता है। अजीब है, जरूर कुछ बात होगी, कुछ राज है–कहीं कोई मिस्ट्री, कोई रहस्य है।

फिर तीसरे शुक्रवार को उन्होंने जाकर प्रार्थना की कि चलिए हमारी मस्जिद

में, लेकिन उसने कहा कि मैं दो बार हो आया हूँ। और बात खत्म हो चुकी है। उस मस्जिद के लोगों ने कहा–आज तीसरा मामला है, आप चलिए। हम तीसरा उत्तर देने की तैयारी करके आये हैं। उस फकीर ने कहा–जो आदमी तैयार करके उत्तर देता है उसके उत्तर हमेशा झूठ हैं। उत्तर भी कहीं तैयार करने पड़ते हैं। तैयार करने का मतलब है कि उत्तर मालूम नहीं है। जिसे मालूम है वह तैयार नहीं करता। और जिसे मालूम नहीं है वह तैयार कर लेता है। उस फकीर ने कहा–तुमने तैयार किया है उत्तर, तब तो वह निश्चित ही झूठ होगा। उस उत्तर को बिना सुने ही कह सकता हूँ कि वह झूठ है। लेकिन मैं चलूँगा।

वह तीसरी बार गया। उस गाँव के लोग बड़े होशियार रहे होंगे। लेकिन होशियारी कभी–कभी बड़ी महंगी पड़ती है। यह पता नहीं, होशियारी उन चीजों के मामले में बहुत महंगी पड़ जाती है जहाँ होशियारी से काम नहीं चलता, जहाँ सादगी से, सरलता से काम चलता है। सत्य के जगत् में होशियारी काम नहीं करती। सत्य की दुनिया में सरलता काम करती है। वहाँ वे जीत जाते हैं जो सरल हैं और वे हार जाते हैं जो होशियार हैं। पर उस गाँव के लोग बड़े होशियार थे, उन्होंने बड़ी तैयारी की थी, उन्होंने सोचा, आज तो फकीर को फँसा ही लेना है। लेकिन उन्हें पता नहीं कि फकीरों को फाँसना मुश्किल है, क्योंकि फकीर का मतलब यह है कि जिसने फँसने के सब रास्ते तोड़ दिये हैं। और उन्हें यह भी पता नहीं कि दूसरों को फँसना मुश्किल है, क्योंकि फकीर का मतलब यह है कि जिसने फँसने के सब रास्ते तोड़ दिये हैं। और उन्हें यह भी पता नहीं कि दूसरों को फँसने के सब रास्ते तोड़ दिये हैं। और उन्हें यह भी पता नहीं कि दूसरों को फँसाने में अक्सर आदमी खुद फँस जाता है।

खैर, वह फकीर पहुँच गया और उसने कहा–दोस्तों, फिर वही सवाल, ईश्वर है या नहीं आधे मस्जिद के लोगों ने हाथ उठाये और कहा कि ईश्वर नहीं है। अब हम दोनों उत्तर देते हैं। तब आप बोलिए। उस फकीर ने आकाश की तरफ हाथ जोड़े और बोला–भगवान! बड़ा मजा है इस गाँव में। और कहा–पागलों! जब तुम आधों को पता है और आधों को पता नहीं है तो आधे जिनको पता है उनको बता दें जिनको पता नहीं है। मुझे बीच में क्यों ले आते हो? मेरी बीच में क्या जरूरत है? जब इस मस्जिद में दोनों तरह के लोग मौजूद हैं तो आपस में ही तुम निपटारा कर लो, मैं जाता हूँ।

उस गाँव के लोग फिर चौथी बार उस फकीर के पास नहीं आए। चौथा उत्तर खोजने की उन्होंने बहुत कोशिश की, लेकिन चौथा उत्तर नहीं मिल सका।

असल में तीन ही उत्तर हो सकते हैं–हाँ, ना या दोनों। चौथा कोई उत्तर नहीं हो सकता है। चौथा क्या उत्तर हो सकता है? तीन ही उत्तर हो सकते हैं।

वह फकीर बहुत दिन रूका रहा और प्रतीक्षा करता रहा कि शायद वे फिर आयें, लेकिन वे नहीं आए। बाद में किसी ने उस फकीर से पूछा कि क्यों रूके हो यहाँ? उसने कहा कि रास्ता देखता हूँ कि शायद वे चौथी बार आयें लेकिन वे नहीं आये। उस आदमी ने कहा–चौथी बार हम कैसे आयें? चौथा उत्तर ही नहीं सूझता। हम क्या उत्तर देंगे, जब तुम बोलोगे? उस फकीर ने कहा अगर मैं बताऊंगा वह उत्तर तो वह भी बेकार हो जाएगा। तुम्हारे लिए फिर वह सीखा हुआ उत्तर हो जायेगा।

उस फकीर ने बाद में अपनी आत्मकथा में लिखा है कि मैं राह देखता रहा कि शायद उस गाँव के लोग आयें और मुझे ले जायें। और मैं जब सवाल पूछूं तब वे चुप रह जायें और कोई भी उत्तर न दें। अगर वे कोई भी उत्तर न देंगे तब मुझे बोलना पड़ेगा, क्योंकि उनके उत्तर की चुप्पी बताएगी कि वे खोजने वाले लोग हैं। उन्होंने पहले से कुछ मान नहीं रखा है। वे यात्रा करने के लिए तैयार हैं, वे जा सकते हैं, जानने के लिए, उन्होंने कुछ भी नहीं मान रखा है। जिसने मान रखा है वह जानने की यात्रा पर कभी नहीं निकलता। जिसका कोई विश्वास है, वह कभी भी सत्य की खोज पर नहीं जाता। इसलिए पहली बात यह कहना चाहता हूँ कि सत्य की खोज पर वे जाते हैं, जो सिद्धान्तों के कारागृह को तोड़ने में समर्थ हो जाते हैं।

x x x x x x x

खजाने सत्य के

मैं ने सुना है कि एक राजधानी में एक भिखारी की मृत्यु हो गयी रोज ही कोई मरता है। उस गाँव में उस भिखारी का मर जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। लेकिन बड़ा आश्चर्य हो गया और सारा गाँव वहाँ इकट्ठा हो गया जहाँ उस भिखारी की लाश पड़ी थी। तीस–पैंतीस वर्षों तक वह भिखारी उस चौराहे पर बैठकर भीख माँगता रहा, फिर उसकी मौत हुई। लोगों ने उसके चीथड़ों में आग लगा दी, उसके टूटे–फूटे बर्तन फैंक दिये और उसकी लाश को उठाकर ले जा रहे थे, तभी किन्हीं लोगों ने कहा–इस भिखारी ने इस जमीन पर बैठकर तीस वर्षों में जमीन भी गन्दी कर दी है। थोड़ी जमीन

की मिट्टी भी खोदकर साफ कर ली जाये। जैसे ही उन्होंने जमीन खोदी, वे सब हैरान रह गये। सारा नगर वहाँ इकट्ठा हो गया। खुद सम्राट भी वहाँ आया। वह भिखारी जिस जगह पर बैठकर भीख मांगाता रहा, उस जगह पर बहुत धनगढ़ा हुआ था, बहुत खजाने भरे हुए थे। लेकिन उस भिखारी ने सब तरफ हाथ फैलाये, कभी वह जगह खोदकर नहीं देखी जहाँ वह बैठा था। और तब गाँव के सारे लोग हँसने लगे और कहने लगे भिखारी बिल्कुल पागल था।

लेकिन उस गाँव में फिर भी किसी आदमी को यह ख्याल भी नहीं आया कि कहीं ऐसा ही मेरे साथ भी तो नहीं हो रहा। जहाँ मैं खड़ा हूँ, वहीं खजाने गड़े हों और मै जिन्दगी भर बाहर हाथ फैलाकर भीख मांगता रहूं

हम जहाँ खड़े हैं, जहाँ हमारा अस्तित्व है, जो हमारा होना है, वहीं खजाने गड़े हैं सत्य के। और हम शास्त्रों में खोजेंगे, गुरुओं के चरणों को पकड़ेंगे शब्दों में खोजेंगे, सिद्धान्तों में खोजेंगे पर वहाँ कभी नहीं जहाँ हम हैं। कोई भीतर नहीं खोजेगा सत्य को, कोई कुरान में, कोई बाईबिल में, कोई महावीर के पास, कोई बुद्ध के पास, लेकिन कभी कोई वहाँ फिक्र नहीं करेगा जहाँ वह है, जहाँ वह खुद है। और सत्य जब भी मिलता है। तब वहीं मिलता है जहाँ हम हैं। चाहे बुद्ध को मिले तो किसी और के पास नहीं मिलता, अपने भीतर मिलता है और चाहे महावीर को मिले तो किसी और के पास नहीं मिलता, अपने भीतर मिलता है चाहे क्राइस्ट को मिले तो भी और के पास नहीं मिलता, अपने भीतर मिलता है। सत्य जब भी मिला है अपने भीतर मिला है और जिन्हें भी कभी मिलेगा, अपने भीतर ही मिलेगा। और हम बाहर ही खोजते-खोजेते समाप्त हो जाते हैं, इसलिए उसे उपलब्ध नहीं कर पाते।

x x x x x x x

सत्य का आवास

एक छोटी-सी कहानी मुझे याद आती है। सुना मैंने भगवान ने दुनिया बनायी तो आदमी को बनाया, पर आदमी को बनाते ही वह बहुत परेशान हो गया। और उसने सारे देवताओं को बुलाया और कहा-आदमी को बनाकर मैं बहुत मुसीबत में पड़ गया हूँ और मुझे ऐसा लगता है कि यह आदमी चौबीस घंटे मेरे दरवाजे पर खड़ा होकर शिकायतें करता रहेगा। अब मैं सो न सकूँगा, न शान्ति से बैठ सकूँगा। इस आदमी से मुझे बच जाना बहुत जरूरी है। मैं कहाँ छिप जाऊं कि आदमी मुझे न खोज पाये?

उसके देवताओं ने बहुत-से रास्ते सुझाये। किसी देवता ने कहा आप हिमालय की गौरीशंकर चोटी पर बैठ जायें। ईश्वर ने कहा-तुम्हें पता नहीं, बहुत जल्द तेनसिंह और हिलेरी नाम के लोग वहाँ पहुँच जायेंगे और मेरी मुसीबत शुरू हो जायेगी। किसी ने कहा-पेसिफिक महासागर में पांच मील नीचे गहराई में छिप जाइये। ईश्वर ने कहा-तुम्हें पता नहीं जल्दी ही वहाँ वैज्ञानिक पहुँच जायेंगे। किसी ने कहा-चाँद-तारों पर बैठ जायें। ईश्वर ने कहा-तुम्हें पता नहीं, क्षण भी नहीं बीत पायेंगे और वैज्ञानिक वहाँ चरण रख देंगे। मुझे कोई ऐसी जगह बताओ जहाँ आदमी न पहुँच सके।

फिर एक बूढ़े देवता ने ईश्वर के कान में कहा-आप आदमी के भीतर ही छिप जायें, आदमी वहाँ कभी नहीं जायेगा। और ईश्वर ने वह बात मान ली और वह आदमी के भीतर बैठ गया। और सच में ही आदमी वहाँ कभी नहीं जाता। एक जगह छोड़कर आदमी सब जगह जाता है, एक जगह चूक जाता है, वहाँ वह नहीं जाता। वह खुद के भीतर होने का जो डाइमेन्शन है, वह जो खुद के भीतर होने की दिशा है, वहाँ हमारे पैर कभी नहीं पड़ते। शायद हमें उसका पता ही नहीं कि भीतर भी एक मार्ग है। शायद हमें पता हीं नहीं कि भीतर भी कुछ है। हमें उसका कोई स्मरण नहीं है और इसलिए एक जगह हम चूक जाते हैं और उस जगह से जो चूक जाता है वह सत्य से भी चूक जाता है।

कोई अगर पूछे कि सत्य का मन्दिर कहाँ है, कोई अगर पूछे की सत्य का आवास कहाँ है, कोई अगर पूछे कि कहाँ है सत्य, तो एक ही उत्तर है कि वह जो भीतर है, वह जो इनरनैस है, वह जो भीतर होता है, वही मन्दिर है, वही आवास है, वही जगह है जहाँ सत्य बैठा है।

सत्य की लर्निंग

एक अन्धा आदमी, अपने मित्रों के घर मेहमान था। मित्रों ने बहुत-बहुत उसका स्वागत किया था, बहुत सत्कार किया था, बहुत स्वादिष्ट मिष्ठान बनाये थे। फिर वह अंधा मित्र पूछने लगा कि यह जो मैं खा रहा हूँ, बहुत स्वादिष्ट है, यह काहे से बना है, यह क्या है? मित्रों ने कहा कि यह दूध से बनी हुई चीज है। वह अंधा आदमी कहने लगा, दूध के संबंध में मुझे कुछ समझाओ, कैसा होता है दूध? वे मित्र कहने लगे, बगुला देखा है? वह बगुले की तरह सफेद, बगुले के पंखों की तरह सफेद होता है, बिल्कुल शुभ्र। वह अंधा आदमी कहने लगा-पहेलियां मत बुझाओ, मुझे यह भी पता नहीं कि दूध क्या होता है? अब तुम कहते हो कि बुगले के पंखों की तरह सफेद। मुझे यह भी पता नहीं कि बगुले के पंख क्या होते हैं। मुझे यह भी पता नहीं कि यह सफेद क्या है। तुमने तो और मुश्किलें खड़ी कर दीं। मेरी पहली मुश्किल अपनी जगह है कि दूध क्या है? और दूसरी मुश्किल खड़ी हो गई कि बगुला क्या है? और तीसरी मुश्किल खड़ी हो गई कि यह सफेद क्या है? अब तो मुझे समझाओ कि यह बगुला क्या है? मित्रों ने कहा कि यह तो बहुत मुश्किल हो गई। यह आदमी अंधा है, इसे रंग कैसे समझाया जा सकता है? उस मित्र ने कहा कि तरकीब निकालो जिससे मैं समझ सकूं कि बगुला क्या होता है।

एक मित्र समझदार रहा होगा। वह पास आया और अपना हाथ अंधे के पास ले गया और कहा मेरे हाथ पर हाथ फेरो। जिस तरह मेरा हाथ सुडौल और झुका हुआ है, इसी तरह बगुले की गरदन होती है। उस आदमी ने हाथ पर हाथ फेरा, फिर वह खुशी से नाचने लगा और कहने लगा-मैं समझा गया कि दूध कैसा होता है। मैं बिल्कुल समझ गया कि मुड़े हुए हाथ की तरह दूध होता है। उस अंधे के मित्रों ने अपने हाथ सिर से ठोंक लिए और उन्होंने कहा-यह तो बड़ी मुश्किल हो गई। समझाने हम चले और नासमझी पैदा हो गई। अंधे को समझाना बहुत मुश्किल है कि रंग कैसा होता है।

जो भीतर से नहीं जानता, उसे बाहर से बताने का कोई उपाय नहीं है। अंधा अगर भीतर से जानता हो कि रंग कैसा होता है तो बाहर से बताया जा सकता है। फिर बताने की भी कोई जरूरत नहीं। यही उलझन है, जीवन में

सबसे बड़ी उलझन यही है। जो जानते हैं, उन्हें बताने की कोई जरूरत नहीं और जो नहीं जानते, उन्हें बताने का कोई उपाय नहीं है। जो नहीं जानते हैं, उन्हें बताने से उलझन पैदा हो जाती है। ओर जो जानते हैं उन्हें तो बताने का कोई सवाल ही नहीं है, कोई जरूरत नहीं है। लेकिन जाना भीतर से जा सकता है और बताया हमेशा बाहर से जा सकता है। इसलिए सत्य को कभी बताया नहीं जा सकता, जाना जा सकता है। जानने का अर्थ यह हुआ कि भीतर से हमारी कोई पकड़ और पहचान होनी चाहिए। और बताने का अर्थ यह हुआ कि जिनकी पकड़ और पहचान हो, वह हमें बता दें।

एक गाँव में बुद्ध मेहमान थे। कुछ लोग एक अंधे आदमी को पकड़ लाये और कहने लगे कि इस मित्र को समझा दें कि प्रकाश है। यह आदमी इन्कार करता है। यह कहता है कि प्रकाश नहीं है। यह आदमी हमसे कहता है कि मैं छूकर देखना चाहता हूँ तुम्हारे प्रकाश को। कहाँ है, लाओ, मैं जरा छूकर देख लूं। अब प्रकाश छूकर नहीं देखा जा सकता। लेकिन अंधा आदमी तो चीजों को छूकर ही जानता है। उसके जीवन की पहचान का रास्ता स्पर्श है। होने का, अस्तित्व का सबूत स्पर्श है उसके लिए। वह कहता है कि मैं प्रकाश को छूकर देखना चाहता हूँ। और वह गलत तो नहीं कहता, वह चीजों को छूकर ही जानता है। जिनका छू लेता है, मानता है कि वे हैं। जिनको नहीं छू पाता, मानता है कि नहीं हैं। छूना ही होने का प्रमाण है। और फिर वह अंधा आदमी हँसता है और कहता है, नहीं ला पाते अपने प्रकाश को तो व्यर्थ की बातें करते हो? क्यों स्वप्न देखते हो? प्रकाश नहीं होगा।

उन मित्रों ने बुद्ध से कहा कि आप आये हैं गाँव में तो हमने सोचा कि शायद आप समझा सकेंगे, इसलिए इस मित्र को ले आये हैं। यह कहता है कि मैं छूकर देख सकता हूँ, स्वाद देख सकता हूँ। बताओ तुम्हारे प्रकाश को, मैं उसकी ध्वनि सुन लूँ।

सुगन्ध हो तुम्हारे प्रकाश में तो उसकी वास ले लूँ। लेकिन जब हम कहते हैं, कि प्रकाश को न छुआ जा सकता है न सुगन्ध ली जा सकती है, न वास, न उसकी ध्वनि है, उसे तो देखा जा सकता है तब यह अंधा आदमी कहता है कि यह देखना क्या है? क्योंकि अंधे आदमी को यदि देखने का ही पता हो तो वह अंधा नहीं होता। और तब वह हँसता है और कहता है कि नाहक मुझे

अंधा सिद्ध करने को क्यों प्रकाश की बातें करते हो? तुम्हें भी दिखाई नहीं पड़ता, किसी को भी दिखाई नहीं पड़ता। जो नहीं है, वह कैसे दिखाई पड़ेगाा

बुद्ध ने कहा कि मैं इसे नहीं समझाऊँगा, क्योंकि उस दिशा में इसे समझाना नासमझी होगी। मैं तुमसे कहूँगा कि इसे किसी विचारक के पास ले जाने की जरूरत नहीं है। इसे किसी वैद्य के पास ले जाओ। इसे उपदेश की आवश्यकता नहीं है, इसे उपचार की जरूरत है। इसकी आँख का इलाज करवाओ ताकि यह देख सके। जिस दिन यह देख सकेगा भीतर से, उस दिन ही जान सकेगा, उससे पहले नहीं। लाख बुद्ध समझायें तो भी कोई फर्क नहीं पड़ सकता।

उस अंधे आदमी को वैद्य के पास ले जाया गया। उसकी आँख पर कोई जाली थी, जो छह महीने के प्रयोग से कट गई। वह आदमी नाचता हुआ बुद्ध के पास आया, उनके चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा कि प्रकाश है। लेकिन बुद्ध ने कहा - छूकर दिखाओ कहाँ है? मैं छूकर देखना चाहता हूँ तो वह अंधा आदमी हँसने लगा और कहने लगा-नही, वह छूकर नहीं जाना जा सकता। तो बुद्ध ने कहा-मैं उसका स्वाद लेना चाहता हूँ। वह आदमी कहने लगा-आप मजाक न करें, उसका स्वाद भी नहीं लिया जा सकता। तो बुद्ध ने कहा-बताओ उसे, ताकि मैं उसकी ध्वनि सुन सकूं। वह आदमी कहने लगा कि आप पुरानी बातें छोड़ दें। अब मुझे भी दिखाई पड़ता है। प्रकाश को देखा जा सकता है, मैं देख रहा हूँ, वह है।

लेकिन बुद्ध ने कहा-पहले वे तुम्हें समझाते थे तो नहीं समझता था। उस आदमी ने कहा-मेरी कोई गलती न थी। गलती थी। तो उनकी ही थी जो समझाते थे। क्योंकि अंधे आदमी को कैसे समझाया जा सकता है? और अगर मैं उनकी बात मान लेता तो गलती में पड़ जाता। मैंने उनकी बात नहीं मानीं नहीं मानी तो उन्हें मेरा इलाज करवाना पड़ा। अगर मैं उनकी बात मान लेता तो शायद इलाज की कोई जरूरत न थी। मैं मान लेता और बात खत्म हो जाती, मैं अंधा ही रह जाता और मैं कभी भी नहीं जान पाता। जाना जा सकता है सत्य को, माना नहीं जा सकता। सीखा नहीं जा सकता, सिखाया नहीं जा सकता। सत्य की कोई लर्निंग नहीं होती। इसलिए सत्य का कोई स्कूल नहीं होता जहाँ सिखा दिया जाये और लोग सीख लें। लेकिन चिकित्सा हो सकती है। आँख का उपचार हो सकता है। वह आँख का उपचार कैसे हो सकता है।

ज्ञान का पहला चरण

मुल्ला नसरूद्दीन फकीर था। वह एक छोटे से गाँव में नाव चलाने का काम करता था। दो पैसा नाव पर लेता था लोगों से। एक दिन गाँव का बड़ा पण्डित नाव पर सवार होकर पार जा रहा था। बीच नदी में उसने मुल्ला से पूछा-मुल्ला! गणित जानते हो? उस मुल्ला ने कहा-गणित! गणित कैसा होता है? उस पण्डित ने कहा-अरे मूर्ख! पूछता है गणित कैसा होता है? गणित भी नहीं जानता! तेरी जिन्दगी बेकार हो गई, तेरी चार आना जिन्दगी बिल्कुल बेकार चली गई। क्योंकि जो आदमी गणित नहीं जानता वह और क्या जान सकता है? मुल्ला ने कहा-आप कहते हैं तो ठीक है, चली गई हो।

थोड़ी दूर आगे फिर उस पण्डित ने कहा-ज्योतिष-शास्त्र जानते हो? मुल्ला ने कहा-ज्योतिष-शास्त्र! यह क्या बला है? उस पण्डित ने अपने सिर पे हाथ ठोककर कहा-तेरी चार आना जिन्दगी और बेकार गई। जो आदमी ज्योतिष ही नहीं जानता, वह और क्या जानेगा जीवन को? तेरी आठ आना जिन्दगी बेकार हो गई।

और तभी जोर का तूफान आया और आँधिया घिर गई, बादल घिर गये, नाव डगमगाने लगी। उस मुल्ला ने कहा-पण्डित जी! आपको तैरना आता है? पण्डित ने कहा-बिल्कुल नहीं। उस मुल्ला ने कहा-आपकी यह सोलह आना जिन्दगी बेकार हो गई। मैं कूदकर जाता हूँ। गणित मुझे नहीं आता, न ज्योतिषी मुझे आता हैं, लेकिन तैरना मुझे आता है और मैं जा रहा हूँ, अब नाव डूबने के करीब है। अब आपकी सोलह आने जिन्दगी खत्म हो गई।

तो जिन्दगी मे यह जो नोइंग अबाउट है, चीजों के संबंध में जानना, यह किसी बहुत मूल्य का नहीं है। सत्य के सामने खड़े होने का तो कुछ मतलब है, सत्य के संबंध में जानने का कोई मतलब नहीं है। लेकिन बाहर से जो भी हम जानते हैं वह संबंध में ही जानते हैं, सत्य को नहीं जानते। हम जान भी नहीं सकते, यह स्पष्ट हो जाये तो उस दिशा में हमारी यात्रा होनी शुरू हो जाये।

रूस में एक अद्भुत विचारक था ऑस्पेन्स्की और एक फकीर था गुजरियेफ। ऑस्पेन्स्की उससे मिलने गया। जब उससे मिलने गया था तब

तक ऑस्पेन्स्की की कई किताबें प्रकाशित हो चुकी थीं और एक किताब से तो इतनी प्रसिद्धि उसको मिली थी कि लोग कहते थे कि दुनिया में उसके मुकाबले की सिर्फ दो ही किताबें हैं। एक अरस्तू ने लिखी है किताब, जो यूनान का दार्शनिका था। उस किताब का नाम 'आरगानन' है। वह है सत्य का पहला सिद्धान्त। फिर बेकन ने दूसरी किताब लिखी है 'नोवन आरगानन' सत्य का दूसरा सिद्धान्त और तीसरी किताब ऑस्पेन्स्की ने लिखी है, 'टरटीयम आरगानन' सत्य का तीसरा सिद्धान्त लोग कहते हैं कि बस यह तीन ही किताबें हैं अद्‌भुत। ऑस्पेन्स्की की किताब छप गई थी। उसकी बड़ी कीर्ति और प्रसिद्धि फैल गई थी।

वह गुरजियेफ से मिलने गया। गुरजियेफ एक बिल्कुल ही गाँव का फकीर था। गुरजियेफ से जाकर उसने पूछा कि मैं आपसे कुछ पूछने आया हूँ। ऑस्पेन्स्की बड़ा पण्डित था। गुरजियेफ ने एक कोरा कागज उसको दे दिया और कहा कि पहले इस पर तुम लिख दो, जो तुम जानते हो और जो नहीं जानते हों। क्योंकि जो तुम जानते हो, उस संबंध में मैं कोई बात नहीं करूंगा, क्योंकि जो तुम जानते ही हो, बात खत्म हो गई। जिस संबंध में तुम नहीं जानते, उस संबंध में कुछ बात करूँगा तो तुम्हें कुछ फायदा हो सकेगा। कहा–जाओ, उस कोने में बैठ जाओ और जिस संबंध में तुम्हें पूछना हो, ईश्वर, आत्मा, मोक्ष वह लिख दो कि किस संबंध में तुम जानते हो और किस संबंध में नहीं जानते।

ऑस्पेन्स्की कागज लेकर बैठा ओर बहुत मुश्किल में पड़ गया। सोचने लगा, ईश्वर को जानता हूं? तो ख्याल आया, ईश्वर के संबंध में तो जानता हू, ईश्वर को तो बिल्कुल नहीं जानता। आत्मा को जानता हू? तो ख्याल आया, आत्मा के संबंध में तो जानता हू, आत्मा को तो बिल्कुल नहीं जानता। घण्टे - भर कलम - दवात लिए, कागज लिए बैठा रहा। एक शब्द लिखने की हिम्मत न पड़ी। लौटकर कोरा कागज गुरजियेफ के हाथ में दे दिया और कहा–क्षमा करना, यह तो मुझे आज तक ख्याल ही नहीं आया। तुमने तो एक मुसीबत खड़ी कर दी। मैं तो समझता था कि मैं जानता हूँ। लेकिन तुमने इतने जोर से पूछा और तुम्हारी आँखों को देखकर मुझे डर पैदा हो गया कि यह भागने नहीं देगा। अगर इसने कहा कि जानता हूँ तो पकड़ लेगा। मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं कुछ लिखूं।

तब गुरजियेफ ने कहा–वह जो तुमने अब तक बड़ी–बड़ी किताबों लिखी हैं वह कैसे लिखीं। तुम्हारी किताबों की तो बड़ी कीर्ति है। वे किताबें तुमने कैसे लिखीं? ऑस्पेन्स्की ने कहा–अब तक मुझै यही ख्याल था कि मैं जानता हूँ, लेकिन आज जब यह सवाल सीधा सामने खड़ा हो गया, जो पहले कभी खड़ा ही नहीं हुआ तो मुझे लगता है कि मैं कुछ भी नहीं जानता। गुरजियेफ ने कहा–फिर अब तुम् कुछ जान सकते हो क्योंकि जानने योग्य पहली बात तुमने जान ली है कि तुम कुछ भी नही जानते हो। यह पहली बात तुमने जान ली।

यह ज्ञान का पहला चरण है कि तुम कुछ भी नहीं जानते। यह बड़ी हिम्मत की बात है। यह दुनिया अज्ञान के कारण परेशान नहीं है, झूठे ज्ञान के कारण, झूठी नालेज के कारण परेशान है। यह जो हम सत्य से इतने दूर हैं, यह दूरी अज्ञान के कारण नहीं, यह दूरी झूठे ज्ञान के कारण, मिथ्या ज्ञान के कारण है।

x x x x x x x

जानने की तैयारी

सुकरात जब बूढ़ा हो गया तो सुकरात ने खबर कर दी एथेन्स में कि जाओ सबसे कह दो कि कोई मुझे भूलकर भी ज्ञानी न कहें जब मैं जवान था, तब मुझे यह भ्रम था कि मैं जानता हूँ। उसके शब्द सोचने जैसे हैं। उसने कहा कि जैसे–जैसे मेरी समझ बढ़ी, वैसे–वैसे ज्ञान हवा हो गया और जब समझ पूरी बढ़ गई है तो मैं कहता हूँ कि मुझसे बड़ा अज्ञानी खोजना मुश्किल है, मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ।

एथेन्स के बूढ़े लोगों ने उस दिन खुशी जाहिर की और कहा कि मालूम होता है, सुकरात ज्ञान के मन्दिर में प्रविष्ट हो गया। लोगों ने कहा–वह तो खुद कह रहा है, मुझसे बड़ा अज्ञानी नहीं है और तुम कहते हो कि ज्ञान के मन्दिर में केवल वे ही प्रविष्ट होते हैं जिनके ज्ञान का भ्रम छूट जाता है, जो कहते है, हम नहीं जानते। जो इतने सरल हो जाते हैं कि कह देते हैं कि हमें पता नहीं ज्ञान के द्वार उनके लिए खुल जाते हैं। क्योंकि जो समझ लेता है कि मैं नहीं जानता, उसकी आँख बाहर से भीतर की तरफ लौटनी शुरू हो जाती है। बाहर के ज्ञान के छुटकारा होते ही मनुष्य ज्ञान की दिशा में प्रविष्ट होना शुरू हो जाता है।

विवेकानन्द अपनी खोज में थे, सत्य की। महर्षि देवेन्द्रनाथ के पास वे गये। अंधेरी रात थी और महर्षि एक बजरे पर गंगा पर निवास करते थे। विवेकानन्द पानी में कूद कर आधी रात में बजरे पर पहुँच गये। द्वार को धक्का दिया, जाकर महर्षि की गरदन पकड़ ली। वह ध्यान मैं बैठे थे। घबराकर उन्होंने अपनी आँखें खोली। कोई युवक था, पानी में लथपथ, आधी रात दरवाजे पर खड़ा था। और विवेकानन्द पूछने लगे – मैं जानना चाहता हूँ, ईश्वर है?

बहुत पूछने वाले लोग महर्षि देवेन्द्रनाथ के पास आये होंगे, लेकिन ऐसा आदमी कभी नहीं आया। गरदन पकड़ कर किसी से ईश्वर पूछा जाता है? और आधी रात बेवक्त पानी को तैर कर आ गया है यह युवक। वह भी घबरा गये, एक क्षण को झिझक गये। कहा–बेटा, बैठ जाओ, फिर मैं बात करूं। विवेकानन्द ने कहा–बात खत्म हो गई, आपकी झिझक ने सब कुछ कह दिया। वह आदमी, विवेकानन्द, कूद कर वापस चला गया। महर्षि बुलाते रहे कि सुनो भी, बैठो भी। उसने कहा–बात खत्म हो गई।

वही युवक दो महीने बाद रामकृष्ण के पास गया। उसी ढंग से जाकर रामकृष्ण को पकड़ लिया और कहा कि ईश्वर है? रामकृष्ण ने कहा–उसके सिवाय और कुछ भी नहीं, तुझे जानना हो तो बोल। यहाँ कोई झिझक न थी और रामकृष्ण ने यह नहीं कहा कि मैं तुझे समझाऊँगा। रामकृष्ण ने कहा–तुझे जानना हो तो बोल। यह फिक्र छोड़ दे कि है या नहीं। तुझे जानना है कि नहीं, यह बता। विवेकानन्द ने कहा है पहली दफा मैं झिझक के खड़ा हो गया। अब तक मैं लोगों को पकड़ कर झिंझोड़ देता था, क्योंकि अभी तक मैंने यह सोचा ही नहीं था। कि मेरी जानने की तैयारी है या नहीं। रामकृष्ण के पास कुछ बात ही और थी। जिनसे पहले पूछा था उनके पास सीखे हुए शब्द होंगे, भीतर उनके खुद भी सन्देह होगा। रामकृष्ण के पास अपना अनुभव था, शब्द नहीं थे। अनुभव के पास झिझक नहीं होतीं अनुभव बेझिझक है, अनुभव असंदिग्ध है। उसमें कोई सन्देह नहीं। लेकिन ऐसा ज्ञान सदा भीतर से आता है, जो असंदिग्ध है। और जो मुक्त करता है।

x x x x x x x

सुबह के टुकड़े

मैं ने सुना है, एक महाकवि समुद्र के किनारे गया था। सुबह ही सुबह जब वह समुद्र के किनारे पहुँचा तो आकाश में सूरज की रोशनी बरसती थी, ठंडी हवाएं सागर की लहरों से खेलती थीं। सागर की लहरों से नाचती हुई उस रोशनी में वह खुद भी नाचने लगा, रेत के तट पर। एकान्त था, सुन्दर सुबह थी, उसे स्मरण आने लगा अपनी प्रेयसी का, जो एक अस्पताल में बीमार पड़ी थी, और उसे ख्याल आया काश! आज इस सुन्दर सुबह में वह भी यहाँ मौजूद होती। कवि था, उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। और फिर उसे ख्याल आया, क्यों न मैं एक खूबसूरत पेटी लाऊं और उस पेटी में इस छोटी-से टुकड़े को भर के भेज दूँ अपनी प्रेयसी के पास।

वह बाजार से एक खूबसूरत पेटी ले आया और उसने आकर बड़े प्रेम से समुद्र के किनारे उस पेटी को खोला। सूरज की किरणों को, हवा को, सुबह के उस सुन्दर छोटे से रूप को उस पेटी में बन्द करके ताला बन्द कर दिया। एक चिट्ठी लिखी और पेटी एक आदमी के सिर पर रखकर अपनी प्रेयसी के पास भेज दी। उस पत्र में उसने लिखा कि सुबह के एक छोटे-से खण्ड को तुम्हारे पास भेजता हूँ। सूरज की किरणों को, सुबह के सुन्दर छोटे-से टुकड़े को, एक कतरे को तुम्हारे पास भेजता हूँ। तुम नहीं आ सकती हो समुद्र के तट तक, बीमार हो तो मैं ही समुद्र के तट की एक स्मृति को तुम्हारे पास भेजता हूँ। नाच उठोगी, जब इस पेटी को खोल कर देखोगी।

उस प्रेयसी को बहुत हैरानी हुई। पेटी में सुबह के टुकड़े कैसे भर कर भेजे जा सकते हैं? पत्र पहुँच गया, पेटी पहुँच गयी। उसने पेटी खोली, पर उस पेटी के भीतर कुछ भी न था, न तो सूरज की किरणें थीं न ठण्डी हवाएं थी, न कोई सुबह थी। वहाँ तो घुप्प अंधकार था। उस पेटी में कुछ भी न था। समुद्र के किनारे जो दिखाई पड़ता है, उसे पेटियों में भर कर भेजने का कोई उपाय नहीं। और परमात्मा के किनारे और सत्य के सागर के पास पहुँच कर जो अनुभव होता है, उसे तो शब्दों की पेटियों में भर कर भेजने का और कोई भी उपाय नहीं।

शब्द आ जाते हैं कोरे और खाली। वह जो किनारे पर जाना है, वह पीछे ही रह जाता है। जो पहुँच जाते हैं सत्य के तट पर, उनके प्राणों में भी यह पीड़ा यह प्यास फड़कती होगी कि जो प्रियजन पीछे रह गये हैं। उन तक खबर पहुँचा दें। वे जो नहीं आ पाये हैं यहाँ तक, उन तक भी थोड़ी-सी खबर पहुँचा दें। वे शब्दों को पेटियों में भर कर हम तक भेजते हैं। गीता और कुरान और बाइबिल की किताबें पहुँच जाती हैं, शब्द पहुँच जाते हैं, पेटियां पहुँच जाती हैं, लेकिन जिन्होंने भेजा था वे वही रह जाते हैं, वे नहीं आते। उनकी करूणा तो प्रकट होती है, लेकिन शब्द आज तक कुछ भी करने में समर्थ नहीं हो पाये।

शब्द कभी भी समर्थ नहीं हो सकेंगे। अगर वह प्रेयसी उस पेटी को सिर पर रख कर नाचने लगे तो हम कहेंगे पागल है। और अगर वे प्रेयसी उस पेटी को देखकर यह समझ ले कि कुछ भेजने की कोशिश की गयी थी जो नहीं पहुँच सका है और पेटी को लात मार कर फेंक दे और दौड़ पड़े सागर की तरफ तो एक दिन वहाँ पहुँच जायेगी। उसी सागर-किनारे, जहाँ सूरज की किरणें नाचती हैं और सुबह की ठंडी हवाएं बहती हैं और सागर की लहरें नृत्य करती हैं। लेकिन यह तभी हो सकता है जब वह पेटी को लात मार कर फेंक दे और उस तरफ दौड़ पड़े जहाँ से पेटी में कुछ लाने की कोशिश की थी, लेकिन नहीं ला पाये ओर तभी वह प्रेयसी भी सागर के किनारे पहुँच सकती है।

शास्त्रों को फेंक कर उस तरफ दौड़ जाते हैं, जहाँ से शास्त्र आते हैं, वे वहाँ पहुँच जाते हैं, जहाँ सत्य का किनारा है, जहाँ सत्य का सागर है। लेकिन हम उन पागलों की तरह हैं जो गीता को सिर पर रख कर नाचते रहते हैं और वहाँ नहीं पहुँच पाते, जिस किनारे से कृष्ण ने खबर भेजी। बाईबिल को सिर पर रखकर बैठ जाते हैं, छाती पर रख कर बैठ जाते हैं और उस किनारे तक नहीं पहुँच पाते जहाँ से क्राइस्ट ने यह खबर भेजी।

क्राइस्ट और कृष्ण और महावीर और बुद्ध अगर कहीं भी होंगे तो सिर धुन कर रोते होंगे हमें देखकर कि पागलों को हमने खबर भेज दी थी कि तुम सागर-किनारे आ जाना। वे हमारी खबर को लिए हुए बैठे हैं, वे वहीं रूक गये हैं। अगर उनका वश चले तो लौट कर हमसे किताबें छीन लें। लेकिन अगर कृष्ण भी आ जायें ओर गीता छीनने लगें तो हम कृष्ण की गरदन दबा देंगे कि हमसे गीता छीनते हो? गीता छिन जायेगी तो फिर हमारे पास क्या रह जायेगा?

सत्य की उपलब्धि

दो स्तोवस्की ने एक किताब लिखी है रूस में। उस किताब का नाम है 'ब्रदर्सकरमाझोव'। उस अद्‌भुत किताब में उसने यह लिखा है कि 1800 वर्ष बाद जीसस क्राइस्ट को यह ख्याल आया कि 1800 वर्ष पहले मैं पृथ्वी पर था, लेकिन तब मुझे मानने वाला एक भी आदमी नहीं था। तब जो लोग मेरे दुश्मन थे उन्होंने मुझे सूली पर लटका दिया था। अब मुझे जाना चाहिए जमीन पर। अब तो आधी जमीन मुझे मानती है। अब तो गाँव-गाँव में मेरे चर्च हैं, मेरे पुजारी हैं, क्रास लटकाये हुए मेरे पुरोहित हैं। जगह-जगह मेरा प्रचार है। जगह-जगह मेरा नाम है। ऐसी कौन-सी जगह है, जहाँ जीसस का मन्दिर न हो? लाखों सन्यासी जीसस का नाम लेकर सारी पृथ्वी पर प्रचार करते हैं। तो जीसस ने सोचा कि अब मैं जाऊं। अब ठीक समय आ गया है। अब समय पक गया है। अब मेरा स्वागत हो सकेगा।

और एक दिन रविवार की सुबह जेरूशलम के एक गाँव में ईसा उतर कर एक झाड़ के नीचे खड़े हो गये। लोग चर्च से वापिस लोट रहे थे, सुबह की प्रार्थना पूरी करके। उन्होंने एक झाड़ के नीचे जीसस को खड़े देखा, तो वे बड़े हैरान हुए। उन्होंने कहा-यह कौन आदमी रंग-ढंग बना कर खड़ा हुआ है? यह कौन आदमी है जो बिल्कुल जीसस बन कर खड़ा हो गया है? कोई अभिनेता, कोई नाटक का अभिनेता मालूम होता है। उन्होंने भीड़ लगा ली और मजाक करने लगे। जीसस से कहा-मित्र! बिल्कुल बन गये हो, बिल्कुल ऐसे लगते हो जैसे जीसस क्राइस्ट हो। जीसस ने कहा-बन गया हूँ? मैं तो वही हूँ। लोग हँसने लगे किसी ने पत्थर फेंका, किसी ने जूता फेंका और कहा कि बडे पागल हो गए हो तुम। भाग जाओ, हमारा पादरी आता है, अगर देख लेगा तो मुसीबत में पड़ जाओगे। जीसस ने कहा-तुम्हारा पादरी या कि मेरा पादरी? तुम मुझे पहचानते नहीं, मैं ही हूँ जिसकी तुम प्रार्थना करते हो। वे सब खूब हँसने लगे। उन्होंने कहा-तुम्हारी भली-भाँति पूजा हो जायेगी, भाग जाओ।

लेकिन जीसस ने कहा-लोग नहीं पहचानते, कोई हर्ज नहीं, लेकिन मेरा पादरी तो मुझे पहचान लेगा जो सुबह-शाम मेरे ही गीत गाता है। पादरी आया तो जीसस की जो लोग मजाक उड़ रहे थे, वे ही लोग पादरी के झुक-झुक

कर पैर छूने लगे। ऐसा ही हुआ है-दुनिया में भगवान आ जाए तो आदमी मजाक उड़ायेगा और भगवान की पूजा और धंधा करने वाले जो पुजारी हैं, उनके झुक-झुक कर लोग पैर छूते हैं। पादरी के लोग पैर छूने लगे।

जीसस ने कहा-बड़ा गजब है। बड़ा कमाल है, जो मेरे गीत गाता है उसके पैर छूते हो ओर मेरी तरफ देखते भी नहीं? लोगों ने कहा-चुप, अगर पादरी के सामने इस तरह की बातें कहीं तो हम बहुत अपमानित अनुभव करेंगे। और पादरी ने सिर ऊपर उठाकर देखा और कहा-यह कौन बदमाश आदमी यहाँ खड़ा हआ है? इसे नीचे उतारो। जीसस ने कहा-तुम भी मुझे नहीं पहचान पा रहे हो? तुम तो अपने गले पर मेरा क्रास लटकाये हुए हो। लेकिन जीसस को क्या खबर कि उसको जिस सूली पर लटकाया गया था, वह लकड़ी की सूली थी और पादरी सोने का क्रास लटकाए हुए थाा। सोने के भी कहीं क्रास हुए हैं दुनिया में? और क्रास पर आदमी लटकाया जाता है, क्रास भी कहीं गले में लटकाया जाता है?

उस पादरी ने कहा-यह आदमी कोई शैतान मालूम पड़ता है। हमारा जीसस एक बार आ चुका है। अब उसे आने की कोई जरूरत नहीं। अब उसका काम हम भली-भाँति कर रहे हैं। तब जीसस को पकड़ लिया गया और चर्च की एक कोठरी में बन्द कर दिया गया। जीसस तो बहुत हैरान हुए। यह तो वही काम शुरू हो गया जो 1800 साल पहले हुआ था। क्या मुझे फिर से सूली पर लटकाया जायेगा?

आधी रात में पादरी आया, दरवाजा खोला, जीसस के पैरों पर गिर पड़ा और बोला महानुभाव! मैं आपको पहचान गया था। लेकिन बाजार में हम आपको कभी नहीं पहचान सकते। आपकी अब कोई जरूरत नहीं है। काम बिल्कुल ठीक से चल रहा है। हमने दुकान अच्छी तरह जमा ली है। तुम तो पुराने गड़बड़ करने वाले हो। तुम आये तो फिर सब गड़बड़ कर दोगे। हम बामुश्किल जमा जाते हैं अपनी दुकान कि तुम वापिस लौट-लौट कर आ जाते हो। तुम्हारे आने की कोई जरूरत नहीं। हम तुम्हें बाजार में नहीं पहचान सकते हैं। आपकी कोई आवश्यकता नहीं ओर गड़बड़ को तो क्षमा करना, हमें फिर वही व्यापार करना पड़ेगा जो अट्ठारह सौ साल पहले किया गया था।

कृष्ण के साथ भी यही होगा और महावीर के साथ भी यही होगा। और

महावीर के साथ जैन यही करेंगे और कृष्ण के साथ हिन्दू यही करेंग ओर मुहम्मद के साथ मुसलमान यही करेंगे। जिनकी किताबों को पकड़ कर हम बैठे हैं, हमें पता नहीं कि वे सब हमसे किताब छुड़ा देना चाहते हैं और जिनके शब्दों को पकड़ कर हम बैठे हैं, उन सब ने यह कहा है कि शब्दों को पकड़ कर मत रूक जाना, क्योंकि मैं तो वहाँ उपलब्ध होता हूँ जहाँ शब्द खो जाते हैं। नि:शब्द में, मौन में, जहाँ सब विचार खो जाते हैं, वहाँ सत्य की उपलब्धि होती है।

मेरे साथ कोई नहीं

मैं ने सुनी है एक कहानी। एक मुसलमान फकीर था। वह रात सोया। रात में उसने सपना देखा कि वह स्वर्ग में चला गया है। सपने में ही लोग स्वर्ग में जाते हैं। असलियत में तो नरक में चले जायें, लेकिन स्वप्न में कोई नरक में क्यों जाये? स्वप्न में तो कम से कम स्वर्ग में जाना चाहिए। स्वप्न में वह स्वर्ग में चला गया। और देखता है कि स्वर्ग के रास्तें पर बड़ी भीड़ भाड़ है, लाखों लोगों की भीड़ है। उसने पूछा कि आज क्या बात है तो भीड़ के रास्ते चलते किसी आदमी ने कहा कि आज भगवान का जन्मदिन है। उसका जलसा मानया जा रहा है। तो उसने कहा बड़े सौभाग्य मेरे, भगवान के बहुत दिनों से दर्शन करने थे। यह मौका मिल गया। आज भगवान का जन्मदिन है, अच्छे मौके पर मैं स्वर्ग में आ गया। वह भी रास्ते के किनारे लाखों दर्शकों की भीड़ में खड़ा हो गया।

फिर एक घोड़े पर सवार, एक बहुत शानदार आदमी और उसके साथ लाखों लोग निकले। वह झुककर लोगों से पूछता-क्या ये जो घोड़े पर सवार हैं, ये ही भगवान हैं? तो किसी ने कहा-नहीं, यह भगवान नहीं हैं, यह हजरत मोहम्मद हैं और उनके पीछे उनको मानने वाले लोग हैं। वह जुलूस निकल गया। फिर दूसरा जुलूस आया और रथ पर सवार एक बहुत शाक्तिशाली व्यक्ति निकला। उसने पूछा-क्या ये ही भगवान है? किसी ने कहा-नहीं, ये भगवान नहीं, यह राम हैं और राम को मानने वाले लोग उनके पीछे हैं। फिर वैसे ही कुष्ण भी निकले और उनके

मानने वाले लोग। और क्राइस्ट और बुद्ध और महावीर और जरथुस्त और कन्फयूशियस और न मालूम कितने महिमाशाली लोग निकले और उनको मानने वाले लोग भी निकले।

आधी रात बीत जाती है, धीरे-धीरे रास्तें में सन्नाटा हो जाता है। फिर वह आदमी ने सोचा है कि अभी तक भगवान नहीं निकले! वे कब निकलेंगे? और जब सारे लोग जाने के करीब हो गये, रास्ता उजड़ने लगा, कोई रास्ते पर ध्यान नहीं दे रहा था, तब एक बूढ़े-से घोड़े पर एक बूढा-सा आदमी अकेला चला आ रहा था। उसके साथ कोई भी नहीं था। वह हैरान होता था कि ये महाशय कौन हैं, जिसके साथ कोई भी नहीं? यह अपने आप ही घोड़े पर बैठकर चले आ रहे हैं, बिल्कुल अकेले। तो वह आदमी कहता है कि हो न हो, ये ही भगवान होंगे, क्योंकि भगवान से अकेला इस दुनिया में और कोई भी नहीं। वह जाकर भगवान को पूछता, उस घोड़े पर बैठे हुऐ बूढ़े आदमी से कि महाशय आप भगवान हैं? मैं बहुत हैरान हूँ, मोहम्मद के साथ बहुत लोग थे, सबके साथ बहुत लोग थे, आपके साथ कोई भी नहीं? भगवान की आँखों से आंसू गिरने लगे और भगवान ने कहा-सारे लोग उन्हीं के बीच बंट गये, कोई बचा ही नहीं जो मेरे साथ हो सके। कोई राम के साथ है, कोई कृष्ण के साथ, मेरे साथ तो कोई भी नहीं। और मेरे साथ वही हो सकता है जो किसी के साथ न हो, मैं अकेला ही हूँ।

घबड़ाहट में उस फकीर की नींद खुल गयी। नींद खुल गयी तो पाया वह जमीन पर अपने झोंपड़े में हैं वह पास-पड़ोस में जाकर कहने लगा कि मैंने एक बहुत दु:खद स्वप्न देखा है, बिल्कुल झूठा स्वप्न देखा है। मैंने यह देखा कि भगवान अकेला है। यह कैसे हो सकता है? वह फकीर मुझे भी मिला और मैंने उससे कहा कि तुमने सच्चा ही स्वप्न देखा है? भगवान से ज्यादा अकेला कोई भी नहीं। क्योंकि जो हिन्दू है, वह भगवान के साथ नहीं हो सकता। जो मुसलमान है, वह भी भगवान के साथ नहीं हो सकता। जो जैन है, वह भी भगवान के साथ नहीं हो सकता। जो कोई भी नहीं है, जिसका कोई विशेषण नहीं है, जो किसी का अनुयायी नहीं है, जो किसी का शिष्य नहीं है, जो बिल्कुल अकेला है, जो बिल्कुल नितान्त अकेला है, वही केवल उस नितान्त अकेले से जुड़ सकता है, जो भगवान है। अकेले में, तनहाई में, लोनलीनैस में, बिल्कुल अकेले में वह द्वार खुलता है। जो भगवान से जोड़ता

है। भीड़-भाड़ से भगवान को कोई संबंध नही। जब हम हिन्दू होते हैं, तब हम एक भीड़ के हिस्से होते हैं। तब हम मुसलमान होते हैं, तब हम दूसरी भीड़ के हिस्से होते हैं। जब हम राम के पीछे चलते हैं, तब भी हम अपनी ही कल्पना के पीछे चलते हैं ओर जब हम बुद्ध के पीछे चलते हैं, तब भी हम अपनी ही कल्पना के पीछे चलते हैं। सत्य से इसका कोई संबंध नहीं हैं, और जब मैं कहता हूँ छोड़ दें इन्हें तो मेरा मतलब यह नहीं है कि राम आदमी के काम के नहीं हैं, बहुत काम के हैं, पर ये ही खतरे हैं, इनसे पकड़ पैदा हो जाती है। जब मैं कहता हूँ छोड़ दो इन्हें, तो मेरा मतलब यह है कि हाथ खाली होने चाहिएँ। जब तक हम किसी को पकड़े हुए हैं तब तक हाथ भरे हुए हैं। और भरे हुए हाथ परमात्मा के चरणों की तरफ नहीं बढ़ सकते। वहाँ खाली हाथ चाहिएँ, जिन हाथों में कोई न हो। और जब हाथ बिल्कुल खाली होते हैं, तब परमात्मा उपलब्ध होता है।

एक और छोटी-सी कहानी से मैं इसी बात को समझाने की कोशिश करूं। मैंने सुना है कृष्ण एक दिन भोजन करने बैठ हैं और रूक्मिणी उनकी थाली पर पंखा झलती है। एक-दो कौर ही उन्होंने खाये हैं ओर फिर थाली को सरकाकर भागे हैं, एक दम दरवाजे की तरफ। रूक्मिणी ने कहा-आप पागल हो गये हैं? आधा खाना खाकर कहाँ भागते हैं? लेकिन कृष्ण ने उत्तर नहीं दिया, वह तो भागते हुए द्वार पर चले गये। फिर द्वार पर ठिठकर कर खड़े हो गये। फिर चुपचाप उदास वापिस लौटकर, भोजन करने लगे। रूक्मिणी ने कहा-बहुत मुश्किल में डाल दिया मुझे। क्या ऐसी जरूरत आ गयी थी? कि इतनी तेजी से भागे? कौन-सी दुर्घटना घट गयी थी? कहाँ आग लग गयी थी? और फिर बिना आग को बुझाये, दरवाजे से वापिस लौट आये, क्या था? कृष्ण ने कहा-सचमुच ही दुर्घटना हो गयी थी। एक मेरा प्यारा, एक राजधानी से गुजर रहा है, कुछ लोग उसे पत्थर मार रहे हैं। उसके माथे से खून की धाराएं बह रही हैं। भीड़ उसे घेरे हुए खड़ी है। बहती हुई खून की धाराओं में भी वह चुपचाप खड़ा हंस रहा हैं मेरी जरूरत पड़ गयी थी कि मैं आ जाऊं, इसलिए मैं भागा। रूक्मिणी ने कहा-फिर द्वार से वापिस कैसे लौट अये? कृष्ण ने कहा-द्वार पर जब पहुँचा, तब मेरी जरूरत न रह गयी। उस फकीर ने अपने हाथ में पत्थर उठा लिया। अब वह खुद ही उत्तर दे रहा है। अब मेरी कोई

जरूरत नहीं। जब तक वह बेसहारा था, तब तक उसका कोई भी न था, जब तक वह बिल्कुल अकेला था, तब तक मेरी जरूरत थी, तब तक उसके पूरे प्राण मुझे चुम्बक की तरह खींच रहे थे। अब वह बेसहारा नहीं है, अब उसके हाथ में पत्थर हैं। उसने पत्थर का सहारा खोज लिया, अब उसके हाथ भरे हुए हैं। अब वह कमजोर नहीं है। अब उसके पास अपनी ताकत है, अब वह लड़ रहा है अब मेरी कोई भी जरूरत नहीं है।

यह कहानी पता नहीं सच है या झूठ। उसके सच और झूठ होने से कोई प्रयोजन भी नहीं है। लेकिन एक बात मैं जानता हूँ और वह बात मैं आपसे कहना चाहता हूँ। जब तक आपके हाथ भरे हुए हैं, जब तक आपका मन भरा है, जब तक आप कोई सहारा पकड़े हुए हैं, तब तक परमात्मा का सहारा उपलब्ध नहीं होगा। उसका सहारा उसी क्षण उपलब्ध होता है, जब आदमी परिपूर्ण बेसहारा हो जाता है।

x x x x x x x

जो बोले वही नासमझ

एक फकीर था शेख फ़रीद। वह तीर्थयात्रा पर निकला हुआ था। तो काशी के करीब से गुजरता था तो काशी के पास ही कबीर का आश्रम था। फरीद के साथियों ने कहा–कितना अच्छा होगा कि दो दिन के लिए हम कबीर के आश्रम पर रूक जायें। आप दोनों की बातचीत होगी, हम आनन्दित होगे, हम सुनकर प्रफुल्लित होंगे। हमारे जीवन में तो अमृत की वर्षा हो जायेगी। फरीद ने कहा–कहते हो तो रूक जायेंगे, लेकिन बातचीत! बातचीत शायद ही हो। लेकिन मित्रों ने कहा–कबीर से आप बात नहीं करियेगा? फरीद ने कहा–बात कबीर से करने की कोई जरूरत नहीं। कबीर भी जानते हैं और मैं भी जानता हूँ, बात क्या करेंगे।

कबीर के साथियों ने कबीर से कहा–सुना है, फरीद निकलता है पास से। क्या ही अच्छा हो कि हम उसे निमन्त्रित करे? और वह दो दिन हमारे पास रहे। आप दोनों की बातें होंग तो हमारे भाग्य खुल जायेंगे। हम कुछ पकड़ लेगे उस बातचीत से। कबीर ने कहा–बातचीत बहुत मुश्किल है। जो भी

बोलेगा वह मूर्ख सिद्ध होगा। फरीद को कहो तो बुला लूं जरूर, बैठेंगे, हँसेंगे, गले मिलेंगे, कहोगे तो रो लेंगे, पर बोलेंगे नहीं, क्योंकि जो बोलगा वही नासमझ सिद्ध होगा। लेकिन लोगों ने कहा-बोलेंगे क्यों नहीं? कबीर न कहा-तुम नहीं मानते हो तो बुला हो।

फरीद को बुला लिया गया। कबीर गाँव के बाहर उसके स्वागत को गये। दोनों गले मिले, देर तक मिले। आँखों में आंसू बहने लगे। दोनों मिलकर बैठ गये झाड़ के नीचे। दोनों के शिष्य घेरकर बैठे हैं कि शायद कुछ बात हो। लेकिन बात न हुई। एक दिन बीत गया और दूसरा दिन भी बीतने लगा और फिर विदा का वक्त भी आ गया। सारे शिष्य घबरा गये कि यह क्या मामला है, बोलते क्यों नहीं हैं। लेकिन वे दोनों हँसते थे, पर बोलते नहीं। फिर विदा भी हो गयी। जैसे ही विदा हुई, कबीर के शिष्यों ने कबीर को पकड़ लिया और फरीद के शिष्यों ने फरीद को और पूछा-यह क्या मामला है, बोलते क्यों नहीं ? कबीर ने कहा-बोलते क्या? जो जानते हैं, वह बोला नहीं जा सकता और दूसरे जानने वालों के सामने बोलते क्या? और फरीद ने कहा-जो बोलता वह मूर्ख सिद्ध होता।

लेकिन ये दोनों आदमी क्यों नहीं बोले ? सत्य जाना जा सकता है, बोला नहीं जा सकता। लेकिन फरीद बोलता था, दूसरों के बीच ओर कबीर भी बोलते थे। फिर वह क्या बोलते थे, अगर सत्य नहीं बोला जा सकता? वे सिर्फ इतना ही बोलते थे, कि वे आपसे भी यह कह सकें कि सत्य को नहीं बोला जा सकता, सत्य नहीं लिया जा सकता। वे आपको भी यह नकारात्मक ख्याल दे सकें कि सत्य मिल सकता है, खोजा जा सकता है, लेकिन किसी से पाया नहीं जा सकता हैं। अगर इतना भी ख्याल बोलने से आ सके, अगर इतनी भी बात स्मरण में आ जाये कि कोई एक ऐसी व्याक्तिगत खोज भी है जिसमें दूसरा सहयोगी और साथी नहीं हो सकता, अगर इतना भी ख्याल आ जाये कि ऐसी यात्रा भी है जो अकेले ही करनी पड़ती है तो शायद उस यात्रा पर कोई निकल जाये, वह इशारा पकड़ में आ जाये। लेकिन हम तो उन पागलों की तरह है कि अगर मैं अपनी अुंगली उठाकर बताऊं कि वह रहा चाँद आकाश में तो आप मेरी अंगुली पकड़ लेंगे ओर कहेंगे कि यह है चाँद। मैं चिल्लाकर कहूँ कि अंगुली से उस तरफ, उस तरफ देखो। और

आप कहेंगे कि बड़ी प्यारी अंगुली है, ठीक है, हम समझ गये कि यही चाँद है, लीजिये आपकी अंगुली की पूजा करें।

जापान में एक मन्दिर है, जहाँ एक अंगुली बनी है–मन्दिर की एक मूर्ति की जगह। और बुद्ध का एक वचन नीचे लिखा हुआ है कि मैं तुम्हें अंगुली दिखाता हूँ कि तुम चाँद को देख लो और तुम मेरी पूजा करते हो। हम सब अंगुलियों की पूजा कर रहे हैं।

शब्द, शास्त्र और सब इशारे उस तरफ हैं, जहाँ न शास्त्र रह जायेगा, न शब्द रह जायेगा, न इशारे रह जायेंगे। लेकिन हम उन लोगों की तरह हैं जैसे रास्ते के किनारे पत्थर लगा होता ओर पत्थर पर तीर का निशान लगाया होता है और लिखा होता है कि जूनागढ़ 50 मील है ओर कई समझदार उसी पत्थर को छाती से लगाये बैठे हैं कि पहुँच गये जूनागढ़। यही पत्थर है जूनागढ़। उस पत्थर पर कि जूनागढ़ बहुत दूर है इस पत्थर को पकड़ कर बैठ गये तो कभी नहीं पहुँचोगे इस पत्थर को छोड़ो और आगे बढ़ जाओ, जहाँ तक पत्थर लगे हैं। छोड़ते ही चले जाना। ओर जहाँ पत्थर आ जाये जिस पर लिखा हो शून्य जूनागढ़ तो समझ लेना कि आ गये वहाँ, जहाँ लिखा है शून्य वाला पत्थर ही सार्थक हैं।

अगर कोई किताब मिल जाये, जिसमें लिखा हो शून्य तो वह किताब धर्मशास्त्र हो सकती है। जहाँ तक शब्द हैं, वहाँ से आगे और आगे और आगे और आगे छोड़ते जाना, छोड़ते जाना है और वहाँ पहुँच जाना है जहाँ फिर और आगे नहीं होता। लेकिन वहाँ शून्य है। सारे शब्दों का इशारा शून्य की तरफ है।

शून्य का अर्थ है ध्यान। शून्य का अर्थ है समाधि। शून्य का अर्थ है सब छोड़कर निपट न कुछ हो जाना, उस 'ना' से सब कुछ मिलता है। शून्य है द्वार–पूर्ण का। शब्द नहीं है। शून्य है द्वार, शब्द है दीवार, शून्य है द्वार।

x x x x x x x

शब्दों से भरी खोपड़ी

जापान में एक फकीर था बोकोजु। उस फकीर से मिलने एक यूनिवर्सिटी का प्रोफेसर आया। वह यूनिवर्सिटी का प्रोफेसर बड़ा ज्ञानी था। बहुत शब्द थे उसके पास। बहुत शास्त्र उसने जाने थे। वह फकीर बोकोजु के झोंपड़े पर गया। थका-मांदा, रास्ते की धूप से उसके चेहरे पर पसीना बह रहा था। वह गया भीतर। उसने बोकोजु को नमस्कार किया और माथे का पसीना पोंछ कर कहा कि मैं यह जानने आया हूँ कि सत्य क्या है? बोकोजु ने कहा, सत्य क्या है यह जानने के लिए यहाँ आने की क्या जरूरत थी ? अगर सत्य होगा, तो तुम्हारे घर में भी होगा और नहीं होगा, तो कहीं भी नहीं होगा। यहाँ किसलिए आये हो ? सत्य का मैंने कोई ठेका ले रखा है? सत्य अगर होगा तो वहाँ भी होगा जहाँ से तुम आ रहे हो और अगर वही नहीं है और वहाँ तुम्हें दिखाई नहीं पड़ा तो यहाँ तुम्हें कैसे दिखाई पड़ सकता है ?

एक अंधा आदमी अपने घर से बाहर निकले और हजार मील चल कर किसी दूसरे के घर में जाये और कहे कि रोशनी कहाँ है? तो वह आदमी भी कहेगा, पागल, अगर आँखें थीं तो रोशनी वहाँ भी थी, जहाँ से तुम आ रहे हो! अगर आँखें नहीं हैं तो तुम दुनिया भर में घूमते रहो, रोशनी कहीं भी नहीं है। रोशनी वहाँ होती है जहाँ आँखें होती हैं और जहाँ आँखें नहीं होती वहाँ रोशनी भी नहीं होती। तुम कहीं भी चले जाओ, क्या तुम्हें सत्य दिखाई पड़ता है? अगर दिखाई पड़ता है तो वहीं दिखाई पड़ जाता, यहाँ आने की क्या जरूरत थी?

तुम यहाँ आये इससे पता चलता है कि तुम अंधे आदमी हो, तुम्हें सत्य दिखाई नहीं पड़ता और इसलिए मैं भी क्या कर सकता हूँ? एक ही बात कह रहा हूँ कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम्हारे ज्ञान ने तुम्हें अंधा बना दिया हो? तुम बहुत जानते हो, कहीं यह खतरा तो नहीं है? बहुत जानने वाले लोग बहुत खतरनाक होते हैं। जिन्हें भी यह ख्याल पैदा हो जाता है कि हम बहुत जानते हैं वे बहुत खतरनाक होते हैं। बहुत जानने से बड़ा अज्ञान दुनिया में दूसरा नहीं है। जिन्हें ज्ञान पैदा होता है वह तो उन लोगों को पैदा होता है जो कहते हैं कि हम जानते ही नहीं, जानने का भ्रम ही छोड़ देते हैं।

बोकोजु ने कहा- मुझे मालूम पड़ता है कि तेरी खोपड़ी शब्दों से बहुत भर गयी है। और इसलिए तुझे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा है। फिर भी थोड़ी देर रूक, मैं थोड़ी चाय बना लाऊं, थका-मांदा मालूम पड़ता है तू, थोड़ी चाय पी ले, थोड़ा विश्राम कर ले, फिर कुछ बात करेंगे। और यह भी हो सकता है कि चाय पीने में बात भी हो जाये और यह भी हो यकता है कि तूने जो पूछा है, चाय पीने में उसका उत्तर भी मिल जाये। उस प्रोफेसर ने कहा-चाय पीने में? और सत्य का उत्तर? आप कह क्या रहे हैं? मैं किस पागल के पास आ गया हूँ? मैंने व्यर्थ इस धूप में इतनी यात्रा की। उस फकीर ने कहा-ठहर, इतनी जल्दी मत कर, मैं थोड़ी चाय बना लाऊं।

प्रोफेसर थका था, बैठा रहा। लेकिन ख्याल तो उसका खत्म हो गया कि इस आदमी से कुछ जानने को मिल सकता है। क्योंकि जो आदमी कहता है कि चाय पीने में सत्य का पता चल जायेगा, उस आदमी से क्या मिल सकता है? फकीर चाय बनाकर ले आया। उसने प्लेट और कप संभाल दी और प्रोफेसर के कप में केतली से चाय डाली। प्याली भर गयी, लेकिन वह फकीर चाय डालता ही चला गया। फिर नीचे का बर्तन भी भर गया, वह फकीर चाय डालता ही चला गया। फिर चाय गिरने के करीब हो गयी। तब वह प्रोफेसर चिल्लाया कि अब रूकिये भी, अब एक बूंद-भर की जगह मेरी प्याली में नहीं है। उस फकीर ने कहा-तुझे दिखाई पड़ता है? और तुझे यह दिखाई पड़ता है कि जिस प्याली में बूंद भर जगह नहीं है, अब उसमें चाय भरने से गिर जाने का डर है? लेकिन तुझे कभी अपनी खोपड़ी में जगह दिखाई पड़ी? वहाँ सब शब्दों से भर गया है, जगह बिल्कुल नहीं है। और अब तेरे पागल होने का वक्त करीब आ रहा है, क्योंकि अब वे शब्द जो तेरे भीतर गये हैं वे बाहर गिरने शुरू हो जायेंगे।

x x x x x x x

थोड़ी देर का ख्वाब

जिस च्वांगत्से की मैंने बात कही, वही च्वांगत्से एक बार एक गाँव के बाहर आया तो एक मरघट पर एक खोपड़ी थी आदमी की। वह उसके पैरों से टकरा गयी। और कोई आदमी होता तो जोर से लात मार कर उस खोपड़ी को अलग कर दिया होता। समझता कि अपशकुन हो गया, कहाँ बीच में खोपड़ी आ गयी। लेकिन च्वांगत्से तो बहुत अद्‌भुत आदमी था। उसने उस खोपड़ी को उठा कर सिर से लगा लिया और बहुत-बहुत क्षमा माँगने लगा। कहने लगा-क्षमा कर दो मुझे, भूल से मेरा पैर लग गया, अंधेरा है, रात है, मैं देख नहीं पाया कि आप यहाँ है।

अब वह खोपड़ी थी आदमी की, मरे हुए आदमी की, न मालूम वह आदमी कब मर गया था। च्वांगत्से के मित्र कहने लगे - क्या पागलपन करते हो? किससे क्षमा माँग रहे हो? च्वांगत्से ने कहा - वह तो थोड़े समय के फर्क की बात है, अगर वह आदमी जिंदा होता तो आज मेरी मुसीबत हो जाती। लेकिन वे लोग कहने लगे - अब वह आदमी जिन्दा नहीं है। च्वांगत्से ने कहा - तुम्हें पता नहीं है, यह छोटे लोगों का मरघट नहीं है, यह गाँव के बड़े लोगों का मरघट हे। मरघट भी अलग-अलग होते हैं, गरीब आदमियों के अलग, अमीर आदमियों के अलग। जिन्दगी में तो फर्क रहेते ही है, मरने पर भी फर्क कायम रहते हैं। च्वांगत्से ने कहा - यह बड़े आदमी की खोपड़ी है, किसी साधारण आदमी की खोपड़ी नहीं है। अगर यह आदमी आज होता तो मेरी मुसीबत हो जाती। लेकिन वे लोग कहने लगे - अब वह नहीं है तो मुसीबत का सवाल क्या है? च्वांगत्से ने कहा - नहीं, क्षमा तो मुझे माँगनी ही चाहिए और भी कई कारणों से मैं इससे क्षमा माँगता हूँ और इस खोपड़ी को अपने साथ ही रखूंगा।

वह उस खोपड़ी को अपने साथ ले गया और रोज सुबह उठकर क्षमा माँगने लगा। मित्रों ने बहुत समझाया कि पागल हो जाओंगे इस खोपड़ी को अपने पास रख कर। क्षमा माँगने की जरूरत क्या है? च्वांगत्से कहने लगा - कई कारण हैं। सबसे कड़ा कारण तो यह है कि बड़े आदमी की खोपड़ी है। लेकिन मित्र कहने लगे - सब खोपड़िया मिट्‌टी में मिल जाती

हैं, छोटे आदमी की और बड़े आदमी की। मिट्टी कोई फर्क नहीं करती कि कौन बड़ा था, कौन छोटा था। च्वांगत्से ने कहा जब छोटे और बड़े सभी मिट्टी में मिल जाते हैं तो छोटा होना और बड़ा होना कहीं एक सपना तो नहीं? जो मिट्टी सब सपनों को मिटा देती है और एक-सा कर देती है। छोटा और बड़ा होना कोई असलियत मालूम नहीं होती, किसी सपने का ख्याल मालूम होता है। मैं इसे इसलिए अपने पास रखता हूँ कि मुझे भी अपनी खोपड़ी की याद रहे जो आज नहीं कल किसी मरघट पर पड़ी रहेगी। चलते-फिरते लोगों को ठोकर लगेगी और फिर मैं कुछ भी न कर सकूँगा। जब आखिर में यह जो जाना है तो आज मेरे सिर में अगर किसी का पैर लग जाये तो नाराज होने की क्या जरूरत है? जब यह हो ही गया है। जो जानते हैं वे कहेंगे कि जो हो ही जाना है, वह हो ही गया है। अगर जिन्दगी मिट जानी है तो मिटी हुई ही है। और अगर जिन्दगी मिट्टी में गिर जानी है तो मिट्टी में गिरी हुई है। यह थोड़ी देर का ख्वाब है, थोड़ी देर का सपना है और लगता है कि बस ठीक है।

x x x x x x x